Final Sept.qxd 8/29/2011 12:31 PM Page 1

UP\GBZ-63\2008 भाद्रपद अश्विन श्री संवत् 2067

ऐं ह्रीं श्री अं आं सौः चतुरस्रयात्मकत्रैलोक्यमोहन चक्राधिष्ठात्र्यै
अणिमाद्यष्टविंशति शक्तिसहित प्रकटयोगिनीरूपायै श्रीमहात्रिपुरादैव्यनमः।

वर्ष : 4 अंक : 8 सितम्बर, 2011 मूल्य : 30 रुपये

आदि संरक्षक :
परम पुज्य ब्रह्मलीन
श्री स्वामी राम जी महाराज
आदि गुरू शंकाराचार्य शारदा पीठाधीश्वर स्वामी राजराजेशाश्रग
जी महाराज
संरक्षक :
स्वामी श्री सर्वेश्वरानन्द जी
डा. संतोष चंद अग्रवाल जी
श्रीमती सुशीला देवी भारद्वाज
श्री वी.के. अग्रवाल
श्री शिव शंकर राठी
सम्पादक :
पं0 सतेन्द्र भारद्वाज 'केशव'
प्रबंध सम्पादक :
श्रीमती रमा देवी
सह सम्पादक :
पं0 राजीव भारद्वाज
बृजेश शुक्ला
प्रसार प्रबन्धक
पं0 गौरव भारद्वाज
विशेष प्रतिनिधिः
महर्षि बाबूलाल शास्त्री
(टोंक राजस्थान)
पं. महावीर प्रसाद जोशी
(हैदराबाद)
पंकज शर्मा जालन्धर
योग विशेषज्ञ :
योगाचार्य डा0 दीनानाथ राय
(लखनऊ)
आयुर्वेद एवं वनस्पति विशेषज्ञः
वैद्य पं. शांति कुमार मिश्र
डा0 गोपाल
कानूनी सलाहकार :
एडवोकेट रविन्द्र कुमार सिंह
उपाध्यक्ष बार एसो0 गाजियाबाद
वित्तीय सलाहकार :
श्री राकेश दौलतराम (सी.ए.)
विशेष सलाहकार :
श्री प्रेम शंकर अग्रवाल
श्री विपिन त्यागी

समस्त सम्पादक मंडल अवैतनिक

पंजीकृत कार्यालय : 4/42, पीले क्वार्टर, लोहिया नगर गाजियाबाद
सम्पादकीय कार्यालयः सी-8 लोहिया नगर, मेरठ रोड, निकट एच.डी.एफ.सी. बैंक, गाजियाबाद
दिल्ली कार्यालयः ई-426ए, न्यू अशोक नगर, दिल्ली
नौएडा कार्यालयः दुकान नं.-11, ओम मार्किट, सैक्टर-15, नया बांस, नौएडा

हमारा लक्ष्य :

1. ज्योतिष के नाम पर भोले-भाले लोगों को अंधविश्वास में डूबोकर लूट-खसोट करने वालों के खिलाफ सख्त कदम उठाना।
2. भारतीय वैदिक ज्योतिष को गणितीय मापदण्डों के साथ असली प्रारूप में जनता के सामने लाना।
3. ज्योतिष के सिद्धान्तों को चिन्हित करना।
4. वैद्यशालायें एवं अनुसंधान केन्द्र खोलकर ज्योतिष के क्षेत्र में नई खोज करना।
5. ज्योतिष को अध्यात्म के साथ जोड़कर ज्योतिष को गुमराह कर रहे तत्वों को जनता के सामने लाना।
6. भारतीय संस्कृति, संस्कृत ज्योतिष एवं वशं परम्परागत कार्यों को करने वाले ब्राह्मणों का उत्थान करना।

हमें आपका साथ एवं सहयोग चाहिए।

-सम्पादक

Final Sept.qxd 8/29/2011 12:31 PM Page 2

अनुक्रमाणिका

क्र.सं.	लेख	पृष्ठ सं.
1.	सम्पादकीय	3
2.	कौन करें शनि महाराज के दर्शन	4
3.	रहिमन चुप घर बैठिये देख	5
4.	कांग्रेस पर शनि की ढैया	6
5.	क्या होगा इन भविष्यवाणी वालों	7
6.	राहु-केतु का विभिन्न राशियों में	8
7.	लुटेरे ज्योतिषियों की पोल खुली	9-10
8.	अठारह से अधिक गुण मिलने	11
9.	एक अनुसंधान एक अनूठा शोध	12-13
10.	बड़े रोचक होंगे 2012 विधान	14
11.	पितृपक्ष पर विशेष	15
12.	कैसे करे विजयदशमी पूजा	16
13.	नवरात्र पूजन आवश्यकता क्यों	17
14.	सर्वसिद्धि दायक भगवती मांतगी	18
15.	आध्यात्मिक ग्रन्थ विज्ञान के	19
16.	राधा अष्टमी पर विशेष	20
17.	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर विशेष	21
18.	समस्या और समाधान	22
19.	सर्वकार्य सिद्धि हेतु एक अति..	23
20.	माता से बढ़कर है हरड़	24
21.	श्राप भाग्यहीन बनाता है	25
22.	रत्न (नग) क्यों प्रभावी	26
23.	सृष्टि का प्रथम वृक्ष आँवला	27
24.	धर्म के नाम पर लूट	28
25.	वातरोगनाशक सुरंजान	29
26.	योग एवं तंत्र विज्ञान	30-31

स्वत्वाधिकारी, स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक पं0 सतेन्द्र भारद्वाज केशव द्वारा तायल आफसैट प्रिंटिग प्रेस एफ-6 पटेल नगर थर्ड गाजियाबाद से मुद्रित करवाकर 4/42 पीले क्वाटर लोहिया नगर, गाजियाबाद उ.प्र. से प्रकाशित किया।

सम्पादक : पं0 सतेन्द्र भारद्वाज केशव

मो0 9871050422, 9971980265

R.N.I. No: UPBIL/2008/23467

कापीराईट एक्ट का उल्लघंन करने पर लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। सम्पादक का किसी भी लेखक द्वारा लिखे गये लेख से सहमत होना जरूरी नही। किसी भी विवाद के निस्तारण हेतु गाजियाबाद न्यायालय ही मान्य होगा। कापी राईट अधिकार सर्वज्ञमुनि ज्योतिष दर्पण में निहित रहेगा।

अन्दर के पृष्ठों पर

कौन करें शनि महाराज के दर्शन और क्यों?

कांग्रेस पर शनि की ढैया

राहु-केतु का विभिन्न राशियों में फल आपके लिए!

अठारह से अधिक गुण मिलने पर भी उत्तम मिलान नहीं क्यों?

कैसे करें विजयदशमी पूजा ?

नवरात्र पूजन आवश्यक क्यों?

सृष्टि का प्रथम वृक्ष आँवला

श्री कृष्णा जन्माष्टमी पर विशेष

Final Sept.qxd 8/29/2011 12:31 PM Page 3

सम्पादकीय

बदलते हालात में बदलने ही होंगे ज्योतिषीय मापदण्ड

वेद के चक्षु कहे जाने वाले ज्योतिष को तीन भागों में बांटा गया है। गणना, फलादेश तथा गोचर फल इन में गणना के तहत जन्म कुण्डली निर्माण आता है जो पूर्ण गणित है जन्म समय पर नक्षत्र तथा लग्न स्पष्ट कर ग्रहों को उन की भावों में मौजूदगी के अनुरूप बिठाना यानि पूर्ण जन्म कुण्डली बनाना जो पूर्ण गणित था है और आगे भी नही रहेगा। दूसरा पहलु है फलादेश! तो फलादेश में हमें समय स्थान परिस्थितियों के अनुरूप बदलाव करना ही पड़ रहा है।

बहुत से लोग यह कहते सुन जाते हैं कि पहले बिना जन्म कुण्डली मिलान के ही विवाह होते थे। वह यह नहीं सोचते कि उस समय का हमारा सामाजिक ढांचा क्या था? और आज क्या है? पहले पति पत्नी आपसी तालमेल ठीक न बैठने के वाबजूद अपने परिवार खानदान की इज्जत आबरू के लिए चुपचाप सब कुछ सहन करके जीवन काट लेते थे जो आज नही है। अभी एक ज्योतिषचार्य एक जगह बहस कर रहे थे कि किसी प्रमाणित ज्योतिषिय ग्रन्थ में काल सर्प योग का विवरण नहीं है।

इसलिए काल सर्प योग ही मिथ्या है। उन्हें सर्वप्रथम यह समझना चाहिए कि वह पूवर्जो की लिखी बातों पर ही जीविका न चलायें खुद भी कुछ विवेक का प्रयोग करे। हम मानते हैं कि ग्रन्थों में काल सर्प दोष का विवरण नहीं है किन्तु उस के कारण को समझने की अक्ल तो चाहिए। जिस काल में ज्योतिषीय ग्रन्थों को रचना हुई उस समय के मानव में अथाह सहन शीलता थी। तमोगुण कम था सतोगुण की अधिकता थी। काल सर्प योग वाले व्यक्ति के शरीर में एक विशेष प्रकार के जहरीले पन का प्रभाव होता है जो पहले भी था आज भी है।

पूर्व काल सतोगुण प्रधान तथा सहन शीलता वाला समय था इस लिए उस विषौलपन का प्रभाव कम ही रहता था। उस कम के कारण व्यक्ति या समाज पर उस का दूषित प्रभाव कम था सो पूर्वकालीन ज्योतिषीय ग्रन्थों में उसे अंकित नहीं किया क्यों कि वह उस समय के हालात के अनुरूप लिखे थे। आज समय के परिवर्तन ने उन परिस्थितियों को अधिक प्रभावी बना दिया लोग कालसर्प योग के कुप्रभाव महसूस करने लगे तो उस के निस्तारण का रास्ता भी खोजा गया।

ज्योतिष का सीधा समाज से सम्बन्ध है। लक्ष्य मानव जीवन को सुखमय बनाना है और इस कार्य के लिए यह जरूरी नहीं कि हम लकीर पीट कर ही हर चीज का हल ढूंढे। खुद भी कुछ करना चाहिये।

सामाजिक ढांचे के अनुरूप खुद को रख कर किया गया कार्य ही सर्वप्रिय होता है आवश्यकता अविष्कार की जननी है जब जिस वस्तु की जरूरत पड़ी मानव ने तैयार की तो क्या यह जरूरी है कि जो दोष पूर्व काल में गौण थे आज प्रबल है तो उन पर हम विचार ही न करे और तर्क दें कि इस का शास्त्रों में सार नहीं है।

हर क्षेत्र में शोध हो रहे हैं कुछ नया निकल रहा है और ज्योतिषी है कि लाखों वर्षो से ज्योतिषिय फलादेश पर लिखे ग्रन्थों पर ही ज्योतिष कर रहे है। शायद यह उचित नहीं। हमें आज के परिवेश में आज के सामाजिक ढांचे के अनुरूप अगर जीवन जीना है तो इसी के अनुरूप मानव जीवन में पैदा हो रही कठिनाईयों के ज्योतिषीय समाधान ढूंढने ही होंगे वह चाहे काल सर्प दोष हो या कोई और।

पं सतेन्द्र भारद्वाज
सम्पादक

Final Sept.qxd 8/29/2011 12:31 PM Page 4

कौन करे शनि महाराज के दर्शन और क्यों ?

इस धरती पर प्रत्येक जीव अग्नि,आकाश ,पृथ्वी ,जल वायु इन 5 तत्वों में से किसी एक तत्व की प्रधानता से निर्मित शरीर तथा अन्य 4 तत्वों की सहायता से ही संचालित होता है प्रत्येक तत्व की मात्रा का संतुलित होना स्वस्थ शरीर का कारण है किन्तु ये जरुरी नही की संतुलन सबका ठीक ही हो जहाँ इन तत्वों का असंतुलित होना दिखाई देता है वही मानव देह में विकृतियां देखी जाती है शनि महाराज वायु तत्व ग्रह है जो जन्म कुंडली के 12 भावो में से तीसरे,छठे और ग्यारहवे भाव को छोड़ कर बाकी सभी भावो में अशुभ फल देता है आपकी लग्न कुंडली में अगर तीसरे,छठे और ग्यारहवे भाव में अगर शनि है तो आपको शनि महाराज लाभ ही लाभ देंगे तथा अगर कोई अग्नि तत्व ग्रह जैसे सूर्य या मंगल आपको हानि दे रहे है तो उस स्थिति में शनि के अधिक प्रभाव को प्राप्त करने हेतु अगर आप शनि मंदिर जाते है तो आपको अग्नि तत्व दूषित ग्रहों से राहत मिलेगी शनि का संरक्षण प्राप्त होगा तथा अगर इन तीन भावों से अलग हटकर लग्न कुंडली के बाकी किसी भी भाव में अगर शनि है तो उस स्थिति में शनि मंदिर जाने से आपको हानि ही हानि होगी सिंद्धात है कि अगर कोई आपका सहायक है तो उस के पास जाने से आपको सहायता मिलेगी तथा अगर कोई आपका शत्रु है तो उसके पास जाने से आपको हानि हो सकती है।

शनि की किसी से भी कोई दुश्मनी नही होती पूर्व जन्म में किये गये पाप कर्मो के कारण ही हमे शनि का दूषित प्रभाव भोगना पड़ता है हमने पिछले लेखो में शनि महाराज को ईंमानदार चीफ जस्टिस कहा था मतलब की अगर हमारे कर्म गलत है तो शनि मंदिर जाने से शनि महाराज हमारे दंड को माफ़ नही करेंगे बल्कि और जल्दी ही दंड देंगे क्योकि ये एक ऐसे ग्रह है जो चापलूसी,रिश्वत या सिफारिस कुछ नही मानते ईश्वरीय सत्ता के तहत इन्हें नव ग्रहों में प्रबल दंडाधिकारी के रूप में स्थापित किया गया है ऐसा भी नही कि हमारी लग्न कुंडली में उपरोक्त तीन भावो को छोड़ कर शनि महाराज कही और है तो वो सदा हानि ही देंगे गोचर और महादशा -अन्तर्दशा से भी शनि द्वारा दिए जाने वाले दंड का समय निर्धारित किया जाता है ,शनि के किसी शत्रु ग्रह की महादशा तथा चन्द्र कुंडली के गोचरगत तीन,छ ,ग्यारह भाव में मौजूद होना शनि की क्रूरता को कम करता है इसके साथ ही मकर ,कुम्भ, वृष ,तुला, मिथुन एवं कन्या राशि वालो के लिए भी शनि कठिन दंड नही देते तुला लग्न वालो के लिए शनि मंदिर जाने से न लाभ है न हानि है,मकर और कुम्भ लग्न वाले जातको के तीन, छ, ग्यारह में अगर शनि हो तो उन्हें शनि दर्शन से अवश्य लाभ होगा इस स्थिति में शनि मंदिर जाने से पहले अपनी लग्न कुंडली में शनि की स्थिति देखना अति आवश्यक है,सभी ग्रह सभी के अनुकूल नही होते और सभी ग्रह सभी के प्रतिकूल नही होते।

इनकी अनुकूलता-प्रतिकूलता से ही हम शनि मंदिर जाने का या ना जाने का निर्णय ले सकते है न की आँखे बंद करके। प्राय: देखा गया है कि मेष, सिंह, वृश्चिक लग्न वाले लोगो को शनि मंदिर जाने से अधिकतर नुकसान ही होता है

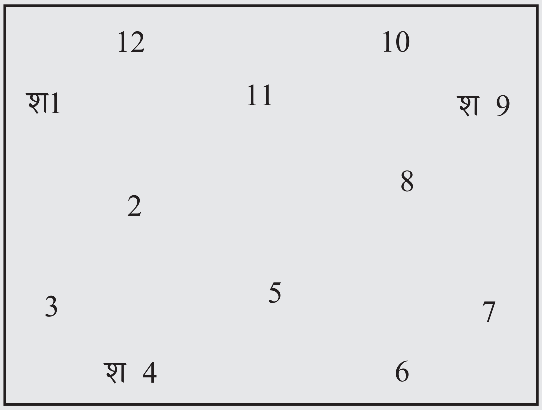

लाभदायक शनि की कुंडली

नोटः- शनि हानिकारक वाले जातक अपने हित के लिए गरीबों को भोजन कराएं नौकरों पर अत्याचार न करें तथा शनि की वस्तुओं का दान करें।

(योग गुरु बाबा राम देव)
रहिमन चुप घर बैठिये देख दिनन के फेर

सब जानते है की भारतीय राजनीति का तथा कुछ पूँजीपतियों का पैसा स्विस बैंको में पड़ा है क्योंकि राजनीति में आने का लक्ष्य ही भ्रष्टाचार करना है। कुछ नेताओं की नीति बन गई है। जनता द्वारा जनता के लिए जनता में से चुने गए कुछ नूमाइंदे खुद को भारत का भाग्य विधाता या राजाओं महाराजाओं की श्रेंणी में गिनने लगा। शायद उन्होंने हिटलर के इतिहास को ज्यादा मन से पढ लिया इस चीज़ का अभ्यास प्रत्येक भारतीय कर रहा था बाबा राम देव जगह -जगह योग के शिविर लगाते थे भारत की जनता अपने तनाव ग्रस्त मस्तिक को तथा रोगों से घिरे शरीर को राहत देने के लिए पतंजली योग के सर्व-सर्वा बाबा राम देव के पीछे लगी जनता से योग में मिला सहयोग देखकर बाबा फूल कर कुप्पा हो गये जनता में नारा दे दिया की स्विस बैंको से पैसा वापस लायेंगे और भ्रष्टाचार मिटायेंगे। भीतर ही भीतर बाबा खुद को भारतीय जनता का मसीहा तथा आने वाले समय में भारत सरकार के विशेष पदों हेतु प्रबल दावेदार मानने लगा उये वो यह नही समझ सके की भारतीय जनता को योग सिखाने के नाम पर जो भारतीय जनता उनके पीछे लगी उसमे जनता का ही भला था बाबा का नही पैसा वापस आता है तो भी भारत की जनता काम करकर ही खाना खाती किन्तु ख्याति बाबा राम देव को मिल जाती। इस स्थिति में बाबा राम देव शायद यह भूल गए की शनि महाराज की साढे साती के कारण ही उन्हें पूरे भारत में घूम -घूम कर ,कूद -कूद कर कपाल भाँति कर के कठिन परिश्रम के साथ जनता की सेवा करनी पड़ी तथा सेवा का मेवा खाने का समय आया तो कांग्रेसियो द्वारा उत्पात मचाने पर महिलाओं के वस्त्र धारण

कर के सभा से पीठ दिखाकर भागना पड़ा राजा विकामादित्य पर भी कुछ -कुछ ऐसी ही शनि की साढे साती आई थी उन्हें नही पता था की शैतान घोड़े की जगह उनको उत्पति कांग्रेसियो की सेना बल द्वारा उड़न खटोले पर बैठाकर उनके ही ? घर पटक दिया जायेगा .

ये शनि महाराज ही की कृपा थी जो मति भंग करके कठोर परिश्रम करवाते है और उसका फल भी प्राप्त नही होने देते, बाबा राम देव को चाहिए की वह सर से उनके ऊपर आई साढे साती का कुछ प्रबल उपाय करे क्योंकि पहले ढाई साल शनि सर पर सवार रहते है जिससे कि मति भंग हो जाती है, उधर कांग्रेस का हम लिख ही चुके है हमारा बाबा रामदेव से अनुरोध है की वह योग के साथ -साथ ग्रहो नक्षत्रो की गति पर भी ध्यान दे बहुत ही दुःख होता है हिन्दू सम्प्रदाय को जब कोई तानाशाही सरकार भगमा वस्त्र धारियों को अपशब्द कहती है बाबा राम देव को इस बात पर अवश्य विचार करना चाहिए ।

क्योंकि करोडों हिन्दुओं की भावनाएं उनके द्वारा धारण किये गए भगमा वस्त्रों से जुडी हुई हैं। अगर बाबा राम देव ,पतंजलि योग पीठ या कोई भी शास्त्र हितैषी राजनीत्ति भारत का भला चाहते हुए ज्योतिषीय सेवाएं लेना चाहे तो अंर्तराष्ट्रीय ज्योतिषीय धर्म संघ तथा मासिक पत्रिका सर्वज्ञ मुनि ज्योतिष दर्पण परिवार ज्योतिषीय सेवायें को निःशुल्क प्रदान करने के लिए सदेव तैयार है।

कांग्रेस पर शनि की ढैया

22 जून तथा 25 जून को ही हमने अपनी वेबसाइड www.astologgden.com में यह भविष्यवाणी कर दी थी। वेबसाइड में लिखी सामग्री निम्न है जो सत्य हुई।

अन्ना हजारे के अनशन पर

इस संसार का तमाम जड़ एवं चेतन जगत ग्रहों से प्रभावित होता है कुछ पूर्वाचार्यो का तो यह तक मानना है की देव लोक एवं पाताल लोक के वासी भी ग्रहों के अच्छे-बुरे भोग भोगते है ,इस स्थिति में कोई सयासी पार्टी जिसमे हजारों लोगों का हित-अहित है वह ग्रहों के दुष्प्रभाव से कैसे बच सकती है कांग्रेस की राशि मिथुन में नीच राशिगत केतु ने एवं लग्न से सप्तम सांझे के घर में नीच राहू का प्रकोप 22 नवम्बर 2009 से 6 जून 2011 तक रहा इसके साथ-साथ मिथुन राशि से चोथे घर में बैठे शनि ने ढैया के तहत कांग्रेसियो के सुख चैन को छीनना नीच राशिगत राहू केतु और शनि की ढैया के प्रकोप का फल ही था की कांग्रेसियो ने रात के 1 बजे साढे साती से पीड़ित श्री बाबा राम देव पर उत्पात किया इसमें भारत की जनता की नजर में कांग्रेस की क्या छवि उभर कर आई यह कहने की आवश्यकता नही राहू केतु द्वारा कांग्रेसियो से करवाएं गए उत्पात एवं चुप-चाप गुप्त तरीके से पुलिस द्वारा किये गए लाठी चार्ज एवंम आंसू गैस के गोले तथा उनके बडबोलेपन का खामयाजा कांग्रेस को लम्बे समय तक भुगतना पड सकता है मंत्रियो और सांसदों का जेल जाना भी ग्रहो का प्रकोप ही है कनिमोझी भी राहू,केतु ,शनि से पीडित रही।

बसपा को भी राहू केतु ने प्रभावित किया किन्तु शनि न्यून रहा जिस कारण वह मानसिक रूप से पीड़ित नही हुए जब कि शनि कि

साढे साती के प्रभाव से कांग्रेसियो को सुख तथा मानसिक शांति से वंचित कर रखा है। इसमें कोई दो राय नही की इस समय कांग्रेसी के चोथे शनि ,सोनिया गाँधी के आठ वे शनि कपिल सिब्बल,मनीष तिवारी पर ढैया बना रहे है। राहुल गाँधी ,प्रियंका गाँधी भी शनि की साढे साती से पीड़ित है।

प्रणव मुखर्जी भी साढे साती से पीड़ित हैं तथा डॉ.मनमोहन सिंह की लगन कुंडली में जब कि शनि अच्छी स्थिति में है फिर भी साढे साती के आखरी ढाई साल होने के कारण उनको शनि महाराज अपनी ही पार्टी के लोगो से रुसवाई दिला रहे है। कपिल सिब्बल राहू -केतु ,शनि से पीड़ित थे सो जाते जाते राहू-केतु ने उनको माध्यम बनवाकर लाल वस्त्र धारियों पर डंडे बरसवाये, इसमें कोई दोराय नही की कांग्रेस और कांग्रेसियो के मुख्य कर्णधार जून 2012 तक 4 जून को किये गए कृत्यों के कार.द्म आशान्त रहेंगे शनि महाराज की कन्या राशि में मौजूदगी न्यायालय को प्रबलता देती है। भारत की जन्म कुंडली पर भी इन तीन ग्रहो का पूरा प्रभाव है किसी से छुपा नही की मंत्री-संतरियो का जेल जाना मिलिटरी एवं पुलिस के बड़े-बड़े अधिकारियों का कलंकित होना,राजनेताओं का भ्रष्टाचार में नंगा होना,सब इन तीन ग्रहों की कृपा से चल रहा है,भारत सरकार को और भारत की अन्य राजनैतिक पार्टियों को अपनी स्वर्णिम /धरोहर को ज्योतिष के चश्मे से अपना एवं अपने शास्त्र का हित देखकर उसके यथा संभव उपाए करने चाहिए धर्म कोई भी हो ,समुदाय कोई भी हो,विचार कैसे भी हो लक्ष्य सबका भारत की भलाई होनी चाहिये क्योंकि प्रत्येक धर्म सम्प्रदाय द्वारा की जाने वाली धार्मिक क्रियाओं का लक्ष्य मात्र सुखमय मानवीय जीवन ही है।

क्या होगा इन भविष्यवाणी वालो का

गत छः सात माह पहले एक भविष्यवाणी ने पूरे संसार में सनसनी फैला रखी थी। 21 मई शाम 6 बजे एक भविष्य वक्ता का पृथ्वी नष्ट होने का दावा था। उसने यह भविष्यवाणी किस आधार पर करी। अमरिकी प्रशासन ने उस धर्म गुरु को क्या अधिकृत किया था इस कार्य के लिए क्या वह व्यक्ति अपने पूज्य ग्रन्थ को हास्य पद बनाना चाहता था? क्या वह धार्मिक गुरु शैतान बुद्धि का स्वामी है या इसके पीछे भी धन कमाने का षड्यन्त्र था?

अब तक किसी की समझ में कुछ नहीं आया। क्या विभिन्न चैनलों पर दिखाई देने वाले एक तर्क शास्त्री चेहरे ने जो उसी सम्प्रदाय का है क्या उसने उस भविष्यवाणी कर्ता से तर्क किया? क्या उस तर्क शास्त्री को इस भविष्यवाणी की जानकारी है? अनेकों सवाल है और जवाब कोई नहीं गत दिनों एक लाल वस्त्रधारी ने करोड़ों हिन्दूओं की आस्था के केन्द्र अमरनाथ बाबा बफार्नी पर ही प्रश्न चिह्न लगा दिया। और ज्योतिष पर तर्क-वितर्क करने वाला वही चेहरा इस विषय पर भी तर्क-वितर्क करने निर्भीकता से चैनल पर आ धमका। और अमरनाथ बाबा बफार्नी के अस्तित्व को ही नकारने की कौशिश की। जबकि सच्चाई ये है कि लाख दो लाख लोगों के हृदय में किसी पत्थर में भगवान होने का भाव है तो वह पत्थर ही भगवान है। क्योंकि भाव से ही भगवान है। तो जिस स्थान को हिन्दु जनता वर्षो से भगवान शिव के रूप में मन में आस्था लिये उस भगवान शिव की पूजा वहां जाकर करने में अपना सौभाग्य समझते है। या उस पूज्य स्थल के बारे में किसी चैनल पर जाकर तर्क-वितर्क करना किसी राष्ट्र की बहुसंख्यक सम्प्रदाय की भावना से खिलवाड़ करना हैं। कल तक ज्योतिष पर तर्क-वितर्क थे आज देवी देवताओं पर शुरू हो गये है। यह कुछ लोगों की हठधर्मिता है। या हिन्दुओं की अथाह सहनशीलता हैं। तो सारी दुनिया में किसी भी प्रकार की अफवाह फैलाना कानूनन अपराध होना चाहिए। विशेषकर ऐसी अफवाह जिससे जनता में एक दहशत का माहौल बनें। यह बात मानवता के भी विपरीत हैं और एक सम्प्रदाय विशेषज्ञ द्वारा समस्त संसार को पृथ्वी नष्ट होने का भय दिखाकर मानसिक रूप से अपंग करना। यह कार्य किसी भी सम्प्रदाय के धर्म गुरू का तो कम से कम नहीं हो सकता।

दूसरा अमेरिका जैसे विकसित राष्ट्र के किसी नागरिक का यह दायित्व कतई नही हो सकता कि वह बतौर धर्म गुरू जनता में दहशत फैलाये। इन सबके बावजूद अमेरिकी सरकार ने उसका क्या बिगाड़ा। सनन्त जैसे तर्क शास्त्री ने उसकी भविष्यवाणी पर तर्क क्यों नहीं दिया। शायद इसलिए की वह ईसाई धर्म का धर्म गुरू है। हिन्दू समाज में इस पूरे प्रकरण पर रोष व्याप्त है। कही ये रोष ज्वाला बनकर ना फूट पड़े। भारत सरकार का चंद वोटों के कारण किसी अल्पसंख्यक ऐसे तर्क शास्त्री को नजर अंदाज नहीं करना चाहिये। ये धर्म निरपेक्षता नहीं हठधर्मिता है। वोटों के लिये किसी भी व्यक्ति को कुछ भी बकवास करने के लिये अधिकृत कर देना कांग्रेस की नीति रही है।

महत्वाकांक्षी होते हैं मिथुन राशि वाले

इस संसार में प्रत्येक व्यक्ति पृथक-2 सोच रखता है। जन्म कुण्डली से भी हम देख सकते हैं कि जातक किस विचार का हैं। चन्द्रमा मनसो जात के अनुसार मन का कारक चन्द्रमा है। शरीर का कारक लग्न एवं लग्नेश तथा आत्मा का कारक सूर्य हैं। तथा अधिकतर मिथुन राशि का स्वामी बुध सूर्य के साथ या सूर्य के आगे पीछे ही रहता है।

जो व्यक्ति बुद्धि एवं आत्मा से सोच विचार कर काम करता है तथा जिसकी राशि का स्वामी होकर बुध सूर्य के साथ में हो तो वह व्यक्ति अपनी वाणी, अपनी बुद्धि आत्मा से बड़े से बड़े कठिन कार्य को आसानी से कर लेता है। किन्तु अधिकतर कुण्डलियों में ऐसा नहीं होता। मिथुन राशि का स्वामी बुध सूर्य से अलग बैठकर व्यक्ति को कल्पनाओं के घोड़ों पर सवारी करवाता रहता है।

ऐसे में बुध के साथ अगर कोई पापक ग्रह बैठ जाये तो वह जिस भाव से स्थित हो उस भाव से सम्बन्धित कार्य या व्यक्ति से सदैव आघात, हानि परेशानी ही पैदा करता है। उदाहरण के लिए पंचम भाव में बुध अगर शनि के साथ है तो वह व्यक्ति हर घटिया से घटिया आदमी को अपना हितैषी समझ लेता है। बुध उसको बेलगाम घोड़ो पर वैचारिक रूप से भ्रमण करने के लिए छोड़ देता है। जिससे अन्त में हानि ही होती है मंगल के साथ बैठकर बुध आदमी को बकवासी और झगडालू बना देता है। गुरू के साथ बैठकर धर्म सम्बन्धित वक्तव्य देने में रूचि देता है। वैचारिक रूप से प्रबलता देने वाले बुध से भला कम और अपावद अधिक होते है। इसलिए बुध से भी सतर्क रहना चाहिए।

राहु-केतु का विभिन्न राशियों में फल आपके लिए!

22 नवम्बर 2009 से अपनी नीच राशियों में संचार कर रहे राहु और केतू 6 जून 2011 को वक्र गति से संचार करते हुए वृष और वृश्चिक में आ चुके है। मिथुन और धनु राशि वालों को इस विगत समय में अनुभव कैसे रहे थे लिखने की आवश्यकता नहीं किन्तु वृष और वृश्चिक राशि वालों के लिए केतु कम तथा राहू अधिक हानिकारक रहेंगे।

कारण कि राहु केतू आपस में शत्रु ग्रह हैं। अब चुंकि राहू वृश्चिक राशि में है तथा वृश्चिक राशि का स्वामी केतू का मित्र है। वृष राशि केतू में तथा वृष राशि का स्वामी शुक्र शनि का मित्र और राहु का सम है तो ऐसी स्थिति में देखने वाली बात ये हैं कि इन राशियों में बैठे हुए राहु-केतू किस-किस का भला या बुरा करेंगे।

एक विश्लेषण **मेष** राशि वालों के लिए राहू-केतू हानिकारक हैं। मृत्यु तुल्य दुख विश्वास घात एवं धन की हानि हो सकती है। **वृष** राशि वाले जातक गुप्त कार्यो में समय लगायेंगे परिणाम सुखद रहेगा किन्तु पत्नी या साझेदार से उत्पात की स्थिति पैदा हो सकती है। **मिथुन** राशि वाले के लिए राहु प्रबल रक्षक बनकर खड़ा है। किन्तु केतु कुछ गुप्त चिन्ताओं व नाजायज खर्चे करवाता रहेगा। **कर्क** राशि वालो के लिए गुप्त संसाधनों से धन का आगमन होगा। तथा बच्चो में उद्दण्ड व्यवहार से चिन्तित रहेंगे। सिंह राशि वाले के लिए राहु केतु का मध्यम फल रहेगा।

सुख में कुछ कमी तथा कार्य में सम्बन्धित गुप्त धारणायें काम आयेंगी **कन्या** राशि वाले इस समय पूर्ण साहस के साथ हर काम करेंगे तथा धार्मिक अनुष्ठानों के माध्यमों से यश की प्राप्ति कर सकते है। **तुला** राशि के जातक सग्रंहित धन का व्यय करेंगे तथा शत्रुओं की साजिसों से पीड़ित रहेंगे।

वृश्चिक राशि के जातक खुद उत्पात माहौल पैदा करके पत्नी अथवा साझीदारों को गुप्त योजनायें बनाने के लिए प्रेरित करेंगे। धनु राशि के जातक धन बल और बाहुबल से अधिकतर क्षेत्र में विजय हासिल करेंगे। **मकर** राशि वाले जातक अचानक धन लाभ प्राप्त करेंगे। उनके बच्चो में नशा आदि की प्रवृत्ति जाग्रत हो सकती है। **कुम्भ** राशि के जातक इलैक्ट्रानिक मशीनरी की तरफ को आकर्षित रहेंगे तथा गुप्त संसाधनों से धन, सुख एव आराम प्राप्त करने के लिए प्रयासरत रहेंगे। **मीन** राशि वाले ईश भक्ति से भागेंगे और कूटनीति से अपना हर कार्य करने का प्रयास करेंगे । अगर किसी भी जातक का राहू और केतू से दूषित प्रभाव प्राप्त हो रहा हो तो ऐसे जातक को बुधबार को दो किलो कच्चे कोयले पानी में बहाये 400 ग्राम रांगा जल में विसर्जित करने चाहिये और अपने अनुपात के जौ पानी में विसर्जित करने चाहिये। गुरुवार को सफेद तिल और इमली पानी मे बहाये। कुत्ते को रोटी खिलाये।

सभी राशि वाले के लिये प्रातः गाय, कौए, कुत्ते की ग्रास देना सदा, सर्वदा लाभकारी होगा।

व्यवसायिक नहीं शास्त्रोक्त विधि से बने यत्र ही काम करते है

हर प्रकार की समस्या के समाधान हेतु

सर्वज्ञमुनि ज्योतिष एवं मंत्र विज्ञान अनुसंधान केन्द्र द्वारा

शास्त्रोक्त समय पर, शास्त्रोक्त पदार्थों द्वारा, शास्त्रोक्त पद्धति से बनाये गये हस्तनिर्मित, प्राण प्रतिष्ठित एवं सिद्ध करके हर प्रकार के यंत्र उपलब्ध कराये जाते हैं।

सी-8 लोहिया नगर मेरठ रोड, गाजियाबाद, (उत्तर प्रदेश) मो0 9871050422

Final Sept.qxd 8/29/2011 12:31 PM Page 9

लुटेरे ज्योतिषियों की पोल खुली

कुछ दिनों से ज्योतिष सम्मेलन करवाने का शौक जोरों पर है। किसी जमाने में विद्वानों को आपस में शास्त्रार्थ करवाने का प्रचलन था। उद्देश्य श्रेष्ठता सिद्ध करने का सुनहरा अवसर प्राप्त करवाना एवं समाज के लिये तथा सूत्रों को प्रस्तुत करके लोगों को शुद्ध ज्ञान प्राप्त करवाना था। एक बार राजा जनक ने अपने दरबार में एक से बढ़कर एक मूर्द्धन्य ऋषियों मुनियों को इकट्ठा कर यह प्रश्न किया था कि मैने एक स्वप्न देखा है कि मैं लकड़हारा हूँ और लकड़ी बेचने का काम कर रहा हूँ। आँखे खुलने पर मैने सोचा कि मैं तो राजा हूँ।

शंका हुई कि मैं वास्तव में कौन हूँ राजा या लकड़हारा। इसका सत्य जानने के लिए उन्होंने शर्त रखी थी कि सही उत्तर न मिलने पर उस व्यक्ति को दंडित किया जायेगा। विद्वान आते गये उत्तर देते गये राजा की चाटुकारिता के कारण एक भी विद्वान सही उत्तर नहीं दे पाया और राजा जनक ने सब को नजरबंद कर दिया। अष्टावक्र जी बालक थे और उनकी उम्र उस समय लगभग 12 वर्ष की थी स्कूल से घर आने पर माँ से पूछा पिताजी कहाँ है तो उत्तर मिला कि वो राजा जनक के कैद में हैं बालक ने पूछा क्यो? मां ने कहा बेटा वह विद्वान होकर भी राजा के प्रश्न का सही उत्तर नहीं दे पाए इसलिए नजरबंद किए गये जो अच्छा विद्वान होकर चाटुकारिता वंश राजा की हाँ मैं हाँ मिलाता है उसका हाल यही होता है। चल बेटे अब तू भोजन करले अटावक्र ने कहा नही माँ मैं अपने पिता को मुक्त कराए। बिना अन्न तो अन्न जल भी ग्रहण नही करूँगा। अटावक्र जनकपुर की तरफ चल दिये। जनक के यहां पर पहुंचते ही दूतों ने कहा राजन एक ब्राह्मण बालक आपका उत्तर देने के लिए प्रस्तुत है जनक ज्ञानी थे उन्होंने सम्मान पूर्वक बालक को अंदर लाने की आज्ञा दी बालक अष्टावक्र आठ जगह से टेढ़ा था। उसको देखते ही वह नजरबंद विद्वान हंसने लगे कहा यह बालक क्या उत्तर देगा।

अष्टावक्र जी ने राजा से कहा इन चर्मकारो को क्यों कैद कर रखा है। विद्वानों के विरोध करने पर बालक ने कहा कि आपको और आपने मेरा टेढ़ापन बदसूरती देखी है विद्वंता नहीं तो आपको और क्या विशेषण दिया जाय क्योंकि चर्मकारी लोगो से अच्छा चमड़े की कीमत का ज्ञान किसे हो सकता है। सब चुप हो गये राजा ने अपना प्रश्न रखा बालक ने उत्तर दिया और कहा कि आपको दोनो प्रश्न असत्य है रात का सपना छोटा और दिन का सपना लम्बा है बस यही अंतर है न आप राजा हैं न लकड़हारा आप परमात्मा के अंश है और उसी में मिल जाएंगे सब व्यक्तियों पर ये नियम लागू होता है। राजा जनक प्रसन्न हुए और कहा जो

इच्छा हो वह माँग लो तो बालक अष्टावक्र ने कहा कि जितने भी विद्वान आपने नजरबंद किए है इनको सम्मान पूर्वक मुक्त करा दो आपसे मेरी यह प्रार्थना है। राजा ने सब को कुछ धन देकर सम्मान पूर्वक विदा किया और अष्ठावक्र जी को अपना आध्यात्मिक गुरू बना लिया। इन ज्योतिष सम्मेलन वालो को उपरोक्त प्रकरण से शिक्षा लेनी चाहिये। इस समय सम्मेलनों के बहाने पर शहर को लूटने का प्रयास चल रहा है। सीधी सादी जनता को निःशुल्क समस्या का समाधान के बहाने यह कथित नकली ज्योतिषी बुलवाते है और उनको ग्रहों का भय दिखाकर उनकी जेबें खाली करवा लेते है। यह लूट के सौदागरों का खेल यन्त्र, गंडा, ताबीज, रत्न पहनाने के बहाने लाखों की ठगी का जाल चल रहा है। इससे सावधान रहना है ये लोग सोने की मोटी-2 चेन पहनने अच्छे होटलों में रहने व शराब सवाब व कबाव तीनो के शौकीन भी है। गाजियाबाद के सतेन्द्र भारद्वाज जी ने यह प्रयास किया कि इन सम्मेलनों से बुराई दूर की जाय नहीं तो ब्राह्मण वर्ग का अपमान होने से कोई रोक नहीं सकेगा। उन्होंने यह कहा कि जो अच्छा विद्वान होगा उसी को मानद उपाधियों से अंलकृत किया जायगा।

इस लिए उन्होंने पिछले वर्ष के सम्मेलन में लगभग दस बारह प्रश्न ज्योतिष से सबन्धित रख दिये और पत्र में यह कहा कि इन्हीं विषयों पर बोलना है जो सटीक उत्तर देगा उसे सर्वश्रेष्ठ स्वीकार किया जायेगा और उसको सम्मानित किया जायेगा अफसोस की बात तो यह है कि कोई भी विद्वान सब प्रश्नों की तो बातें ही छोड़ों एक प्रश्न का भी सटीक उत्तर नहीं दे पाया खेद व्यक्त करते हुए श्री सतेन्द्र भारद्वाज को यह कहना पड़ा कि आप लोगो से यह उम्मीद नहीं थी फिर भी विद्वानों को अच्छी प्रकार से सम्मानित किया गया और अगले वर्ष के लिये हिदायत देते हुए कहा कि अब इस की पुनरावृति न हो 14,15,16 अप्रैल 2011 का सम्मेलन पुनः रखा गया जिसमें उत्तर प्रदेश सरकार में कई एम.एल.ए एम.ए और उच्चाधिकारी भी शामिल हुए। लोक कल्याण के लिए शतचण्डी महायज्ञ भी विधिवत हुआ अफसोस की बात यह रही की आश्वासन देने के बाद भी 60 प्रतिशत ज्योतिषी नहीं आये क्यों कि भारद्वाज जी ने एक शर्त रखी थी कि कोई भी ज्योतिषी जनता से कोई शुल्क नहीं लेगा और नहीं ग्रहों का भय दिखाएगा।

ऐसा होने पर उस ज्योतिषी को संस्था की तरफ से दंडित किया जायेगा क्योंकि भारद्वाज जीने खाने व रहने की व्यवस्था बिना कोई शुल्क लिए की थी। ज्योतिषयों ने सोचा कि हमारी दुकान अब गाजियाबाद में चलने वाली नहीं अतः कुछ लोगों ने प्रोग्राम को फेल करने की पूरी कोशिश कि किन्तु माता रानी की कृपा से प्रोगाम बहुत शान्ति व आनंद पूर्वक सम्पन्न हुआ कुछ लोगों ने तो फोन पर यह भी कहा कि आप गाजियाबाद में भी पाटियों से कोई धन नहीं लेने देते है। हम नहीं आयेंगे। दोस्तों अब जनता मूर्ख नहीं है। पढ़ी लिखी है हर घर में कम्प्यूटर व टी.वी सेट मौजूद है अगर हमने अपना कार्य ईमानदारी पूर्वक व विद्वता पूर्वक नहीं किया तो आने वाले दिनों में समाज हमे बहिस्कृत कर देगा।

गाजियाबाद में कभी भी भारद्वाज जी के द्वारा किये गये सम्मेलन में किसी भी ज्योतिषी से कोई शुल्क इसलिए नहीं लिया जाता कि उनका यह प्रयास रहता है कि भारत भर से पधारे ज्योतिषिगण गाजियाबाद की जनता की अपने ज्योतिष ज्ञान के द्वारा सेवा करें किन्तु शुल्क लेकर भूखे भेड़ियों की तरह किसी भी नगर में आयोजित सम्मेलन में निःशुक्ल सेवा प्राप्त करने हेतु आये आमजनों को पाप पाखण्ड द्वारा जादू टोना ग्रहों का भय दिखाकर लूटने वाले ज्योतिषी इसलिये नहीं आए कि गाजियाबाद में उनके द्वारा लूट नहीं करने दी जायेगी। निःशुल्क सेवा में भ्रष्टाचार क्यों? ज्योतिष सबके कल्याणार्थ है।

लूट का माध्यम नहीं हम आभारी है उन ज्योतिषयों के जो सात्विकभाव से, धन के लोभ से दूर हटकर इस कार्यक्रम में पधारे, शतचण्डी, यज्ञ में भाग लेकर माँ का आर्शीवाद प्राप्त किया और भारद्वाज जी की इच्छा के अनुरूप ज्योतिष के माध्यम से जनता की सेवा की इस कार्यक्रम से यह सिद्ध हो गया कि कौन ज्योतिषी संतोष का धन धारण करके जनता की सेवा करते है और कौन धन के लोभी तथा झूठी शानौ शौकत के कारण सम्मेलनों में लूट करते है।

हमारा सभी ज्योतिष सम्मेलन आयोजकों से अनुरोध है कि भारतीय संस्कृति के अनुरूप भले ही छोटा व सादा कार्यक्रम रखे किन्तु किसी ज्योतिषी से पंजीकरण शुल्क के नाम पर धन वसूलकर उन्हें जनता को लूटने के लिए अधिकृत ना करें हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आगामी वर्ष 2012 में भी श्री भारद्वाज जी द्वारा गाजियाबाद में आयोजित ज्योतिष सम्मेलन में अधिक से अधिक ज्योतिषी धन के लोभ से हटकर जनता की सेवार्थ पधारेंगे।

हम आभार व्यक्त करते हैं अनन्त श्री विभूषित शारदापीठाधीश्वर आदिगुरू श्री शंकराचार्य श्री राजराजेश्वरा श्रम जी महाराज का, चार राज्यों के प्रभारी बसपा सांसद श्री नरेन्द्र कश्यप जी का, श्री प्रशान्त चौधरी जी विधायक गाजियाबाद का तथा समापन सत्र में पधारे विधायक गढ़ मुक्तेश्वर श्री मदन चौहान जी का प्रमुख समाजसेवी श्री सतेन्द्र चौहान जी, नीरा चौहान, श्री प्रोमिल अग्रवाल जी का श्रीमती रितु अग्रवाल जी का जिन्होंने इस कार्यक्रम में पधारकर हमें सांत्वना एवं इस प्रकार के सत्कार्यों को करने की प्रेरणा दी हम सदैव आभारी रहेंगे।

डा0 संतोष अग्रवाल जी, श्री प्रेम शंकर अग्रवाल जी, श्री आर. पी.गुप्ता जी, डा0 आत्मा प्रकाश शर्मा जी, वैद्य श्री शान्ति कुमार मिश्रा जी, अशोक सिंह जी, श्रीमति सुषमा सिंह, श्री धर्मेन्द्र चौधरी, कुमारी कंचन जी, नरेन्द्र वशिष्ठ, अखिलेश कौशिक, जिनके कठिनश्रम से यह कार्यक्रम पूर्ण सफलता से सम्पन्न हुआ।

पं बृजेश कुमार शुक्ल

अठारह से अधिक गुण मिलने पर भी उत्तम मिलान नहीं क्यो?

आज वर या कन्या विवाह से पूर्व जन्मकुण्डली मिलान का काफी प्रचलन हो चुका है जिसका कारण कुछ तो वैवाहिक जीवन में पति-पत्नी का तनाव, अदालतों में तलाक लेने वालों की लम्बी कतारे तथा चारित्रिक पतन। सभ्य समाज सही मायने में इन चीजों से दूर रहना चाहता है। दूसरा कम्प्यूटर पर उपलब्ध साफ्टवेयर जो आम आदमी के लिये आज की तारीख में सुलभ है। जबकि सुविधा हो तो लेने में हर्ज क्या इस नजरिये से प्रत्येक व्यक्ति वर कन्या की शादी के पहले जन्म कुण्डली मिलान घरों में बैठकर ही करना शुरू कर देता है। अब देखना ये है कि इस कार्य के लिये साफ्टवेयर कितना सहायक सिद्ध हो रहा है। अगर हम ये कह दें कि ये मात्र हाथ में झुनझुना देकर बहलाने वाली बात है तो शायद गलत नहीं होगा। क्योंकि अकसर 19 से अधिक गुण मिलने पर जन्म कुण्डली का मिलान ठीक मान लिया जाता है। जबकि किन्ही दो व्यक्तियों की आदत मात्र 19 गुण मिलने से एक जैसी नहीं हो सकती। उदाहरणार्थ अष्टकूट मिलान में प्रथम कूट जातीय कर्म का है। अब इस स्थिति में पति-पत्नी शुद्र व ब्राह्मण वर्ण के हो जाये तो एक की सोच घटिया तथा एक की सोच स्वच्छ होगी। इसी तरह अष्टकूट में एक योनि पर विचार किया जाता है। जिसके मिलने पर चार अंक प्राप्त होते है। अब देखने की बात ये है कि मान लें कि वर की योनि नकुल है। और कन्या की योनि सर्प है। अगर योनि दोनों की शत्रु है और पूरे 36 में से चार गुण कम हो गये और गुण बचे 32 अब इस स्थिति में साफ्टवेयर पर मिलान देखने वाला उत्तम मिलान बता देगा। जबकि पति-पत्नी की योनि नकुल और सर्प होने के कारण इस एक कूट के ना मिलने पर उनके आपसी सामंजस्य या सन्तान पर कुप्रभाव अवश्य पड़ेगा।

ऐसे ही एक कूट है गण तो गण तीन होते है देवता मनुष्य और राक्षस इससे भी अगर राक्षसगण के साथ राक्षस की देवता के साथ देवता की तथा मानव के साथ मानवगण की शादी की जाये तो उनकी अच्छी निभती है। अब उदाहरणार्थ एक का गण राक्षस हो एक का गण मानव हो तो 36 में से अंक कम होंगे मात्र 6 साफ्टवेयर उत्तम मिलान दिखायेगा किन्तु आप सोच सकते है कि पति-पत्नी में एक देवता और एक राक्षस हो तो उनका जीवन कैसे गुजरेगा। अनेकों ऐसी परिस्थितियां है जो आगे चलकर वर कन्या के दाम्पत्य जीवन को तबाह करती है। ऐसे में साफ्टवेयर से 19 से अधिक गुण मिलने पर विवाह कर देना कितना ठीक है विचारणीय विषय है।

जो दिखता है वह बिकता है के अनुरूप जब साफ्टवेयर बाजार में उपलब्ध है तो लोग उसे खरीदेंगे ही किन्तु आम व्यक्ति ये नहीं जानता है कि एक सुखमय वैवाहिक जीवन के लिए व्यवसायिक दृष्टि से एक दो लोगों के मत से तैयार किये गये साफ्टवेयर समस्त समाज को सुखमय जीवन नहीं दे सकते। इसके लिए जरूरी है! कि माता-पिता अपने बच्चे का विवाह करने से पहले मात्र साफ्टवेयर पर ही निर्भर होकर पूरा निर्णय ना ले किसी योग्य ब्राह्मण से इन सब चीजों पर विचार करना सुखमय जीवन का सूत्र है। इस विषय पर बहुत से तर्क वितर्क करने वाले विशेषज्ञ ये कहते सुने गये हैं कि पूर्वकाल में ज्यादातर परिवारों में जन्मकुण्डली का मिलान नहीं किया जाता था फिर भी परिवार का संचालन ठीक होता था। आज के परिवेश में उनका ये तर्क सरासर गलत है। शायद वो ये नहीं सोच पाये कि पूर्वकाल में पति-पत्नी बहुत सी बातों में भिन्नता होने के बावजूद भी अपने माता-पिता, खानदान, परिवार के मान-सम्मान को समझते हुए तथा संस्कारित मर्यादाओं का पालन करते हुए दु:ख व अत्याचार सहने करके भी जीवन व्यतीत कर लेते थे। दूसरी बात सयुंक्त परिवारों का प्रचलन था, घर के बुजुर्गो की बात मानी जाती थी आज ये गुजरे जमाने की बाते हो चुकी है। विवाह के बाद ही अपनी ढपली अपना राग होता है। यह सब बदली हुई परिस्थितियां तथा साफ्टवेयर से किये गये मिलान आज समाज को टूटने के कगार पर लाकर खड़ा कर चुके हैं। जिस पर विचार करना अति आवश्यक हो गया है।

अत: स्पष्ट कर दें कि अगर हम बच्चों का वैवाहिक जीवन सुखमय बनाना चाहते है तो हमे अपने दिमाग से साफ्टवेयर का भूत उतारना पड़ेगा। 19 से ज्यादा गुण मिलने पर मिलान उत्तम का भ्रम त्यागना पड़ेगा गली मौहल्ले में बैठे (रगे, हुये) सियार रूपी ज्योतिषीयों से बचकर किसी सात्विक ब्राह्मण ज्योतिषी से इस विषय पर विचार करना होगा यही समय की मांग है।

सम्पादक

एक अनुसंधान एक अनूठा शोध

क्या आप को नदी वर्षा बादल ऊँचाई से डर लगता है? अगर हां तो करें चन्द्र की पूजा आराम मिलेगा

इस संसार के प्रत्येक व्यक्ति की सोच अलग अलग है। भाव अलग अलग है। किसी को पहाड़ प्रकृति पशु पक्षी अच्छे लगते है, किसी को बुरे। किसी को बादल वर्षा बिजली कड़कती अच्छी लगती है किसी को भयभीत करती है, किसी को अथाह जल राशि अच्छी लगती है। किसी को नहीं ऐसी अनेकों बातें है जिस का पूरा विश्लेषण करना आज के परिवेश में आवश्यक है। कारण की आज ज्योतिष को हर कदम पर तरह - तरह की चुनौतियां मिल रही है।

ऐसे में जो ज्योतिषी अनुसांधन केन्द्रों के बोर्ड लगा कर बाजार में बैठे है उन को कमाई के साथ साथ कुछ शोध करने होगे जिस से इस ज्योतिष को हम एक प्रमाणित विषय घोषित कर सकें।

सर्वज्ञमुनि ज्योतिष एवं मन्त्र विज्ञान अनुसंधान केन्द्र द्वारा ऐसा एक शोध किया है जिस से यहां एक ओर ज्योतिष को प्रमाणित किया जा सकता है वहीं दूसरी तरफ आम जनता को अथाह लाभ होगा।

शरीर के प्रमुख भागों से संचालित होता है। वह है दिल तथा दिमाग। संसार के अस्सी प्रतिशत लोग दिल के अनुरूप कार्य करते हैं तथा बीस प्रतिशत दिमाग से। ''चन्द्रमा मन सो जात:'' के अनुरूप मन का यानि दिल का कारक चन्द्रमा है। जिस की सभी ग्रहों में सब से तीव्र गति है।

सो चन्द्रमा का ही प्रभाव है कि दिल मिनट-मिनट में निर्णय लेता है। और बदलता है। पूर्णमाशी अमावस पर चन्द्रमा की बदलती स्थितिया समुद्र तक को प्रभावित करती हैं तथा इन्ही दिनो में मानव की सोच में भी तरह तरह के परिवर्तन होते हैं। प्रमाणित हो चुका है कि इन्ही दिनों में संसार में सर्वाधिक आत्म हत्यायें होती हैं। वह आत्म हत्यायें दिमाग से नहीं अपितु दिल से लिए गये निर्णय के अनुरूप ही होती है। उन में भी अधिकतर वही लोग होते हैं जिन का चन्द्र पीड़ित होता है। किन्तु इस विषय का गूढ़ रहस्य यह है कि जिन लोगों की लग्न कुण्डली में द्वादश भाव (देखचित्र) बारहवे घर में या आठवें घर में चार अंक हो तो ज्योतिषिय भाषा में उसे द्वादशेष या अष्टमेश चन्द्र कहा जाता है।

ऐसी लग्न कुण्डली के जातक दिल से पीड़ित रहते हैं तथा वह अधिक पानी, बाढ़, वर्षा, आंधी तुफान ऊँचाई से भयभीत होते हैं। तथा जब ऐसे कुण्डलियों में चन्द्र मंगल, सूर्य के साथ या मेष तथा वृश्चिक राशियों में चन्द्र होते हैं तो यही भय और अधिक बढ़ जाता है। धनु तथा सिंह लग्न की कुण्डलियां इस से प्रभावित रहती हैं। इस के साथ-साथ यह भी देखा गया है कि जिन का चन्द्र कम अशों का हो निर्बल हो वह भी इस परेशानी से पीड़ित रहते हैं। निर्णय लेने में ऐसे व्यक्ति निबर्लता महसूस करते हैं। बारहवे तथा आठवें भाव में स्थित चन्द्र भी ऐसे ही संकेत देता है।

एक अनुसंधान के तहत लगभग साढ़े तीन सो जन्म कुण्डलियां ऐसी देखी जिन की उपरोक्त स्थिति थी तथा जिस उपाय अथवा पूजा पाठ से उन को आराम हुआ वह हम आम पाठकों की सुविधा हेतु यहां प्रकाशित कर रहे है।

जिन जातकों की जन्म कुण्डलियों में द्वादशेष अष्टमेष चन्द्र हो वह चन्द्र सहस्त्र व्रत करें शत-प्रतिशत लाभ होगा

सर्वप्रथम यह व्रत किसी विद्वान ब्राह्मण की प्रधानता में सम्पन्न करें। चतुदर्शी के दिन स्नान वगैरह करके ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए मन, वाणी और शरीर पर काबू रखे। अगले दिन पूर्णिमा को उसी प्रकार रहते हुए पहले गणपति गौरी आदि षोडश मातृकोओं का पूजन करें उसके बाद भक्ति पूर्वक नन्दी मुख श्राद्ध करके ऋत्विजों का पूजन करें मन को पवित्र रखते हुए चन्द्रमण्डल के

द्वादशेश चन्द्र की कुण्डली

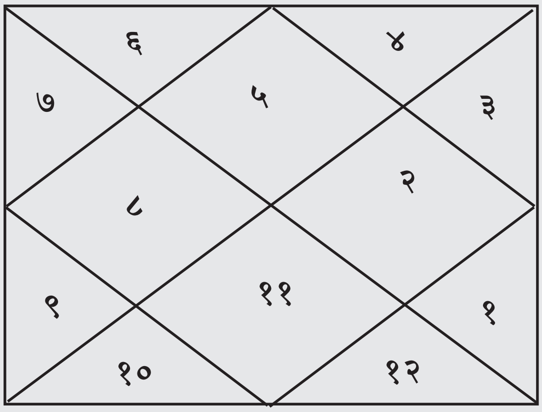

अष्टमेष चन्द्र की कुण्डली

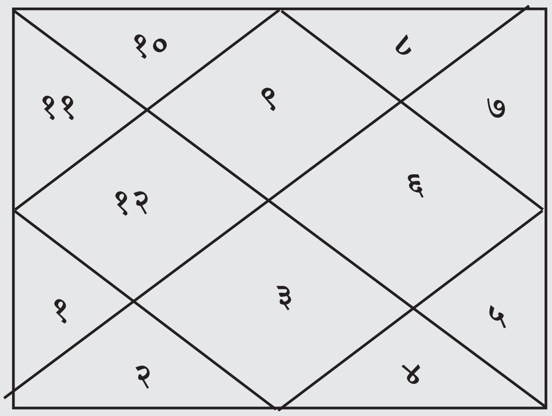

Final Sept.qxd 8/29/2011 12:31 PM Page 13

द्वादश भाव स्थित चन्द्र की कुण्डली

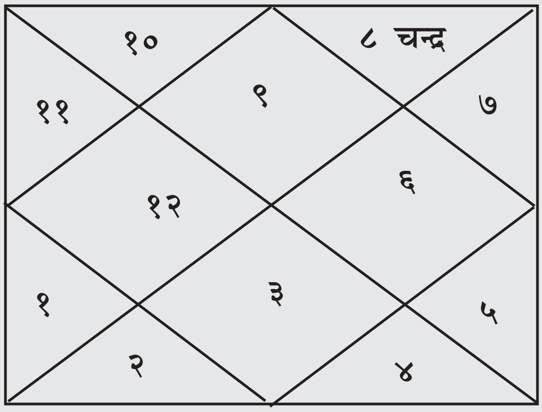

अष्टम भाव चन्द्र की कुण्डली

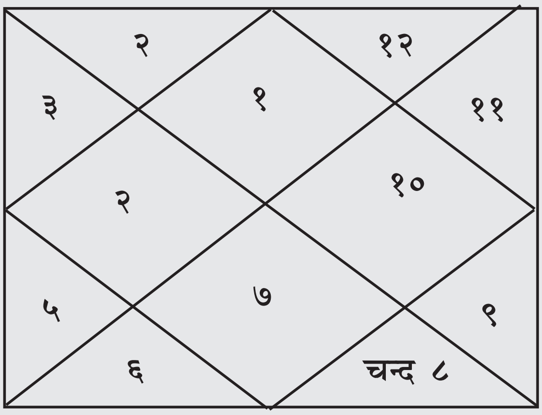

आकार की प्रतिमा बनायें तदन्तर शास्त्रोक्त विधान से चन्द्रमा की पूजा करे।

चन्द्रमा के मन्त्र से यज्ञ हवन करें प्रतिमा स्थापना करते समय भी सोम मन्त्र का उच्चारण करते रहें। सोम की उत्पत्ति और सोम सुक्त का भी पाठ कर सकते है। मण्डल में चन्द्र न्यास कला न्यास और विधिपूर्वक एकादश इन्द्रियाँ का न्यास करें तत्पश्चात साफ चावलों से चन्द्र बिम्ब के समान मण्डल बनावें। उसके बीच में गाय के दूध से भरे हुये कलश की स्थापना करें। फिर उस मण्डल के सन्मुख चद्र, भिन्न-भिन्न नामों का द्वारा (चन्द्रमा के 16 नाम) 11 बार जप करें यानि चन्द्र के 16 नामों को 11 बार पढें।

1. हिमांशवे नमः
2. सोम चन्द्राय नमः
3. विधवे नमः
4. कुमुद बन्धवे नमः
5. सुधान्शुवे नमः
6. सोमाय नमः
7. औषधिशाय नमः
8. अब्जाय नमः
9. मृगांब्धय नमः
10. कला निधये नमः
11. नक्षत्र नाथाय नमः
12. शर्वरी पतये नमः
13. द्विजराजाये नमः
14. चन्द्रमसे नमः
15. चन्द्राय नमः
16. जैवातृकाय नमः

इन 16 नामों से क्रमशः 11 बार पढ़ कर चन्द्रमा का स्तवन करें।

तदन्तर पवित्र चित्त हो शखं मे जल फल-फूल और चन्दन लेकर निम्नलिखित मन्त्र से विधिपूर्वक चन्द्र मुख होकर जल दे।

अर्ध्य का मन्त्र निम्न है

नमस्ते मासामासानते जायमान पुनः पुनः।
गृहाणार्ध्य शंशाक त्वं रोहिण्या सहियो मम्।।

इस प्रकार विधिपूर्वक चन्द्र को जल दे कर प्रणाम करें। इस के पश्चात दूध का कलश वस्त्र में आच्छादित कर ब्राह्मण को दान दें तत्पश्चात् दूध जल मिला कर चन्द्रमा का अभिषेक करें। फिर यथा शक्ति सोलह ब्राह्मणो को भोजन करवाकर दक्षिणा दे कर आर्शीवाद लें।

एक दम्पति ब्राह्मण को नर नारी को वस्त्र प्रदान कर विधिवत् उन का पूजन कर विदा करें फिर उपवास की स्थिति में पूरा दिन व्यतीत करें। सांय काल मात्र फलाहार ले। दूसरे दिन प्रातः विष्णु भगवान की पूजा कर भोग लगा कर बन्धु वान्धवो सहित भोजन करें। तथा नियम का विर्सजन करें। जो इस चन्द्रसहस्र व्रत का विधि पूर्वक पालन करता है वह महापातकी हो तो भी सुख सम्पन्नता पूर्वक जीवन जीता है। उस को चन्द्र दोष से मुक्ति मिलती है तथ धन धान्य की प्राप्ति होती है।

आप को इस पत्रिका में छपी सामग्री कैसी लगी इस विषय पर अपने विचार लिख कर आप पत्रिका के पते पर भेज सकते है। हमें आप के सुझावों एवं विचारों का सम्मान करेंगे तथा पत्रिका में प्रकाशित करेंगे। पत्रिका के प्रति आप के सुझाव एवं विचार पत्रिका के अच्छे प्रकाशन में हमें सहायक सिद्ध होंगें।

प्रबन्ध सम्पादक- रमा देवी मो0- 9871980265
सी-8, लोहिया नगर गा0 बाद E-mail :- www. jyotishdrpn@gmail.com

बड़े रोचक होंगे 2012 विधान सभा चुनाव

बृजेश शुक्ल

गोचरस्थ ग्रहों के प्रभाव से अबकी बार सन् 2012 यू0पी0 विधान सभा चुनाव बहुत रोचक एवं उत्तम होंगे। धन बल व बाहुबल से इस बार चुनावी सफलता नहीं मिलेगी। मेष राशि में स्थित वृहस्पति मित्र ग्रही होने से बलवान है। अत: ईमानदार सच्चे प्रत्याशियों का आत्मबल बढ़ा चढ़ा होगा और जनता का कारक ग्रह चन्द्रमा गुरू का मित्र होने से व गुरू कुंडली से केन्द्रेश होकर गुरू का सहयोगी रहेगा।

अत: राष्ट्रप्रेम व सच्चे जन प्रत्याशियों की विजय अधिक होगी और शुक्र के घर में केतु व मंगल के घर में राहु होने से उद्दण्ड व दागी प्रत्याशियों को कमजोर करेगा। धन बल शराब व ऐश्वर्य दर्शन के दम पर पिछले दिनों काफी दागी व अपराधी किस्म के लोग विजयी हुए थे। किन्तु इस बार इन को मुंह की खानी पड़ेगी। कुछ लोग बड़े अनुष्ठान, यज्ञ आदि भी करवाकर सफलता की कोशिश में रहेंगें और कुछ हद तक कामयाब भी होंगे किन्तु सत्ता में इनकी भागीदारी नगण्य रहेगी।

नवम्बर से तुला में भ्रमणकारी न्यायाधीश ग्रह शनि पूरी शक्ति के साथ होगा और वह निकम्मे, राष्ट्रद्रोही व भ्रष्टाचारी चाहे अफसर हों या नेता या माफिया इनको सलाखों के पीछे पहुँचायेगा। मेहनतकश ईमानदार न्यायप्रिय आदि लोगों पर शनि की पूर्ण कृपा दृष्टि रहेगी। बुध की कन्या राशि, तुला शुक्र की राशि व वृश्चिक मंगल की राशि इन तीनों के घरों पर शनि का प्रभाव पूर्णतया रहेगा। इससे बुध (बुद्धि) मंगल (शक्ति) शुक्र (धन, बल) इन सब पर शनि (न्याय) का कब्जा रहेगा। दृष्टि होने के कारण धनु मेष व कर्क पर पूरा प्रभाव रहेगा कर्क चन्द्र (जनता व सरकारी तन्त्र) धनु गुरू (उच्च वर्ग) मेष मंगल (साहस) इन सब पर भी शनि का पूर्णत: कब्जा रहेगा।

इससे यह सिद्धि होता है कि गुरू व शनि के प्रभाव के कारण वर्तमान सरकार पर संकट के बादल अवश्य मंड़रायेगें उ0प्र0 सरकार यदि कुछ जनता के लिए विशेष कार्य या भ्रष्टाचार पर लगाम लगाने का कार्य करती है और शुद्ध आचरण वाले प्रत्याशियों को चुनाव मैदान में उतारती हैं तभी इस सरकार का बेड़ा पार हो सकता है।

अन्यथा नहीं। वर्तमान यू0पी0 सरकार के कई विधायक जेल में है। और बहुतों पर कार्यवाही हो रही है। वृहस्पति मेष, सिंह व धनु तीनों राशियों पर शुक्र अपनी पंचम, सप्तम व नवम दृष्टि से प्रभाव डालेगा। उपरोक्त तीनों राशियां राज सत्ता कारक है। अत: यह सिद्ध होता है कि अच्छी छवि वाले लोग कामयाब होंगे।

पितृपक्ष पर विशेष

पितेश्वरों की तृप्ति के मास-तिथि-नक्षत्र पर विचार

1. सनातन धर्म एवं हिन्दू संस्कृति के अनुसार एकाग्रचित होकर शुद्ध भाव से श्रद्धा सहित, श्राद कर्म करने से मनुष्य ब्रह्म, इन्द्र, रूद्र, सूर्य, अग्नि, व सुगण, मरूद्गण, पक्षी, मनुष्य, पशु, अश्विनी कुमार, विश्वेदेव, पितृगण सरीसृप, ऋषिगण, भूतगण, आदि समस्त जगत् को प्रसन्न कर देता है।

प्रत्येक मास के कृष्णपक्ष की पंचदशी (अमावस्या) और अष्टमी पर श्राद्ध करें। (चारमहिनों के शुक्ल पक्ष की अष्टमीं) यह नित्य, श्राद्ध काल है।

2. काम्य श्राद्धकाल:- जिस समय श्राद योग्य पदार्थ या किसी विशेष ब्राह्मण के घर पर आ जाने या जब अयन का उत्तरायण या दक्षिणायन का आरम्भ है । व्यतीतपात हो तो यह काम्य श्राद्ध का अनुष्ठान करें। विषुव सक्रान्ति पर सूर्य और चन्द्र ग्रहण पर, सूर्य के प्रत्येक राशि में प्रवेश करते समय नक्षत्र-ग्रह की पीड़ा होने पर दुस्वप्न देखने पर और घर में नवीन अन्न आने पर भी यह काम्य श्राद्ध करें।

पाठको की सुविधा के लिए सरल भाषा के पितरों की तृप्ति के लिए शास्त्रों में जो तिथि मास, नक्षत्र का वर्णन आया है। उसका उल्लेख में पं0 महावीर प्रसाद जोशी इस लेख द्वारा प्रस्तुत कर रहा हूँ। जो निम्नप्रकार से है। कौन तिथि, नक्षत्र में श्राद अर्पण करने से कितने वर्ष तक तृप्त रहते है।

1. तिथि	2. नक्षत्र	3. तृप्त वर्ष तक
अमावस्या -	अनुराधा, विशाखा, स्वांति	- आठ वर्ष
,,	पुण्य, आर्द्रा-पुनव संयुक्त	- बारह वर्ष तक

2. जो मनुष्य पितृगण एवं देवगण को तृप्त करना चाहते हो तो अमावस्या- घनिष्ठा, पूर्णमाप्रदप, शतभिषा, सोलह वर्ष तक ऐसा शुभ अवसर मिलना बहुत ही दुर्लभ है।

पृथ्वी पर जब अमावस्या इन नौ नक्षत्रों से युक्त होती है। उस समय किया हुआ श्राद्ध पितृगणों को अतितृप्तिदायक होता है।

3. इन मासों की चार तिथियां भी अनन्त फल देने वाली है

मास	तिथि	पक्ष
वैशाख	तृतीया	शुक्ल
कार्तिक	नवमी	शुक्ल
भाद्रपद	त्रयोदशी	कृष्ण
माघ	अमावस	कृष्ण

पितृपक्ष पर विशेष

कुशावर्त तीर्थ में त्रिपिडी श्राद्ध करने से पितरों की सन्तुष्टि होती हैं। हमारे पुराणों-शास्त्रों में ऋषिमुनियों ने श्राद्धों के विषय में विशेष रूप से उनका विश्लेषण परिभाषा एवं सार का उल्लेख किया है। श्राद्ध क्या है। क्यों किया जाता है उससे क्या फल मिलता है आदि सनातन हिन्द धर्म में पितरों की मोक्ष शान्ति एवं प्रसन्नता के लिए सविधि, श्राद्ध करने का महत्व माना गया है। पितरों के निमित विधि अनुसार है ''हविष्ययुक्त'' पिण्ड प्रदान आदि कर्म करना ही ''श्राद्ध'' कहलाता है। श्राद्ध करने से पितरों को संतुष्टि मिलती है। एवं वे सदाप्रसन्न रहते है और वे हमे दीर्घायु, बल, तेज, धन-धान्य, शोहरत, स्त्री, वीरोगत और पुत्र-पुत्रादि, सुख, शान्ति देते है।

श्राद्ध पाँच प्रकार के होते हैं।

1. औधोदैविक 2. सांवत्सरिक 3. एकोदिष्ट 4. पार्वण 5. काम्य।

विशेष कामना से किया गया श्राद्ध भी काम्य ही कहलाता है।

काम्य श्राद्ध तीन प्रकार के कहलाते है

1. नारायणबली 2. बागनाबलि 3. त्रिपिड़ी- ये तीन श्राद्ध काम्य श्राद्ध कहलाते है। पितरों के निर्मित किया जाने वाला श्राद्ध शास्त्र में पितृयज्ञ के नाम से जाना जाता है। इसीलिए पितर ही अपने कुल की रक्षा कहते है और हम श्राद्ध, पिण्डदान, तर्पण करके उन्हें सन्तुष्ट करते है।

1. और्ध्वदैनिक:- यह मृतों का श्राद्ध है।

2. सांवत्सरिक :- जो व्यक्ति जिस तिथि को शरीर छोड़ता है उस तिथि के हर वर्ष यह श्राद्ध किया जाता है।

3. महालय श्राद्ध:- भाद्रपद कृष्ण पक्ष में यह-श्राद्ध किया जाता है और पार्षण श्राद्ध भी इसे ही कहा जाता है।

4. तीर्थ श्राद्ध:- तीर्थ क्षेत्रों में किया जाने वाला यह श्राद्ध कहलाता है।

5. एकोदिष्ट श्राद्ध:- त्रिपिंडी श्राद्ध को ही एकोदिष्ट श्राद्ध कहते है।

त्रिपिंडी श्राद्ध

त्रिपिड़ी श्राद्ध काम्य श्राद्ध है। लगातार तीन वर्ष तक जिनका श्राद्ध न किया गया हो। उनको प्रेतत्व प्राप्त होता है। अमावस्या तिथि पितरों की है। इस दिन अवश्य श्राद्ध करना चाहिए। ''नवरात्रि भाद्रपद कृष्ण पक्ष में पितृ तिथि के दिन'' त्रिपिंडी नहीं करनी चाहिए।

त्रिपिंडी श्राद्ध कब और कहाँ पर करें।

मास:- श्रावण, कार्तिक, पोष, माघ, फाल्गुन, वैशाख इनमें से किसी भी शुक्ल या कृष्ण पक्ष की निम्न तिथियों में-

तिथि- पंचमी, अष्टमी, एकादशी, तेरस, चौदस, अमावस्या किसी भी तिथि में त्रिपिंडी श्राद्ध करना शास्त्र सम्मत है।

आमतौर पर यह श्राद्ध की अवधि दो मास की होती है जब सूर्य कन्या राशि व तुला राशि में भ्रमण करता है। यह अवधि दो माह को होती है। दि0 16 सितम्बर से 15 नवम्बर तक।

इस समय में पितरों का निवास पृथ्वी पर रहता है। इसलिए इस समय में यह त्रिपिंडी श्राद्ध करना अधिक श्रेयस्कर माना गया है। यह श्राद्ध त्र्याम्बकेश्वर (नासिक महाराष्ट) में पवित्र तीर्थ स्थल पर करना चाहिए। कभी भी किसी भी समय त्र्यम्बकेश्वर में त्रिपिंडी कि जा सकती है। महाकवि कालीदास ने अपने 'रघुवंश' महाकाव्य में भी कम्बाकेश्वर को ही 'महेश्वर' नाम से संबोधित किया है और इसी काव्य में प्रार्थना भी कि गई है- कि है त्र्यम्बकेश्वर (महेश्वर) जो भी हमे प्रेत रूप में असह्य यातनाऐं दी, पीड़ा पहुंचाई उस की वे सभी प्रकार की हरकतों का नाश करो।

त्र्यम्बकेश्वर में ''कुशार्वततीर्थ'' के पास अश्रत्थ के पेडे के बीच के कर्पादिकेश्वर का मंदिर है। कर्पादि केश्वर के सानिध्य में पितरों के निमित त्रिपिंडी श्राद्ध करने से विशेष लाभ प्राप्त होता है। या फिर त्र्यम्बकेश्वर से 6 किलोमीटर दूर पर ''पिशच्च विमोचन तीर्थ है। वहाँ पर त्रिपिंड़ी श्राद्ध करने से '' पिशाचबाधा दूर हो जाती है।

त्रिपिंडी :- श्राद्ध और तीर्थ श्राद्ध दोनो होतो पहले त्रिपिंडी श्राद्ध कर्म और फिर बाद में तीर्थ श्राद्ध करवाना चाहिए।

तीन प्रकार की प्रेत योनियां

1. तमोगुणी 2. रजोगुणी 3. सतोगुणी। ये तीनों ही प्रेत योनियां है।

1. पृथ्वी पर वास्तव्य करने वाली पिशाच तमोगुणी।

2. अन्तरिक्ष पर वास्तव्य करने वाली पिशाच रजोगुणी।

3. सतोगुणी वायु मण्डलपर वास्तव्य करने वाले पिशाच सतोगुणी है।

इस प्रकार इन तीनों प्रकार की प्रेत योनि की पिशाच पीड़ा की निवृत्ति एवं ''निवारणार्थ'' त्रिपिंडी श्राद्ध किया जाता है। सविधी श्राद्ध करने से पितर प्रसन्न होकर कहते है कि हमारे कुल में क्या कोई ऐसा मतिमान अन्य पुरूष उत्पन्न होगा जो वित्त लोलुपता को छोड़कर हमारे लिए पिण्डदान करेगा। जो सम्पति होने पर हमारे उद्देश्य से ब्राह्मणों को रत्न, वस्त्र, मान सम्मान और सम्पूर्ण भौम सामग्री देगा। अथवा केवल अन्न-वस्त्र वैभव होने पर जो श्राद्ध काल में भक्ति विनम्र- चित से उत्तम ब्राह्मणों को यथा शक्ति का ही भोजन कर पायेगा या अन्नदान में भी असमर्थ होने पर जो ब्राह्मणों को कच्चा धान्य और यथा- शक्ति दक्षिणा ही देगा। और यदि इसमें भी असमर्थ होने पर किसी भी द्विज श्रेष्ठ ब्राह्मण को प्रणाम कर एक मुठ्ठी तिल ही देगा। अथवा हमारे उद्देश्य से पृथ्वी पर भक्ति विनम्र चित्त से सात आठ तिलों से युक्त जलांजलि देगा। और इसका भी अभाव होगा तो कहीं ना कहीं से एक दिन का चारा लाकर प्रीति और श्रद्धापूर्वक हमारे उद्देश्य से गौ माता को खिलायेगा।

तथा इन सभी वस्तुओं का अभाव होने पर जो वन में जाकर अपने कक्षमूल (बगल) को दिखाता हुआ सूर्य आदि दिग्पालों से उच्चस्वर से यह कहेगा ''मेरे पास श्राद्धकर्म करने को लिए न वित्त है पितृ तृप्ति से मिलता सर्व वैभव है न धन है और न कोई अन्य सामग्री-वस्तु है इसलिए मैं मन से अपने पितृों को नमस्कार करता हूँ। और वे मेरी भक्ति से ही प्रसन्न होकर आर्शीवाद देवें। हे पितृगणों मैं दोनों भुजा उठाकर आप की प्रार्थना स्तुति करता हूँ। धन के होने न होने पर, पितृगणों ने जिस प्रकार से बताया है वैसा ही जो पुरूष करता है। वह भाव एवं मन के द्वारा ही विधिपूर्वक श्राद्ध कर देता है।

पं0 महावीर प्रसाद जोशी,
हैदराबाद

Final Sept.qxd 8/29/2011 12:31 PM Page 16

कैसे करें विजयदशमी पूजा?

वेदो-पुराणों में उल्लेख आया है कि सनातन धर्म में वर्ष के बारह मासों के हिन्दुओं के कई व्रत त्यौहार, जयन्तियां आती है। जैसे नवरात्रि उत्सव, कृष्ण जन्माष्टमी जयन्ती, चार्तुमास होली, दीपावली, बसंन्त पंचमी आदि। उसमें एक आसोज सुदी दशमी को भी विजय दशहरा मनाया जाता है। जिसका विवरण पाठकों की सुविधा के लिए सरल भाषा में इस लेख द्वारा प्रस्तुत कर रहा हूँ।

विजय दशमी का त्यौहार वर्षा ऋतु के आरम्भ का संकेत है। इस समय दिग्विजय, यात्रा एवं व्यापार के लिए तैयारियां की जाती है। इस पर्व के लिए श्रवण नक्षत्र मुक्त, प्रदोष व्यापिनी,नवभीविद्धा दशमी प्रशस्त होती है। अपराह्न, श्रवणनक्षत्र तथा दशमी का आरम्भ ही विजय यात्रा का मुर्हुत माना गया है। दुर्गा विसर्जन, अपराजिता पूजन, विजय-प्रमाण, शमी पूजन तथा नवरात्र-पारण भी इस पर्व के महान कर्म है। इस दिन ब्राह्मण लोग सरस्वती का पूजन करते है। और क्षत्रिय शस्त्र का पूजन करते है। इसलिए विजयदशमी या दशहरा राष्ट्रीय पर्व कहलाता है। इस दिन प्रात: काल देवी का विधिवत पूजन करके, नवमी विजय दशमी में विसर्जन तथा नवरात्र का धारण करना चाहिए। दोपहर के बाद ईशान दिशा में भूमि को शुद्ध करके अष्ट दल का कमल बनाकर पूजा की सामग्री अपने पास लेकर रखे। फिर अपराजिता देवी विजया देवियों का विधि विधान से पूजन करें। शमी वृक्ष के पास जाकर विधि पूर्वक शमी देवी का पूजन करके फिर शमी वृक्ष के जड़की मिटटी लेकर आवें और शुद्ध स्थान पर रख देवें। इस दिन शमी के कटे हुये पत्ते अथवा डालियों की पूजा नहीं करनी चाहिए। बंगाल में यह उत्सव बड़ी धूम धाम से मनाया जाता है। देश गांव-गांव शहर-शहर के कोने-कोने में इस पर्व से पहले रामलीलाऐं शुरू हो जाती है। सूर्यास्त होते ही रावण का पूतला दशमी के दिन जलाया जाता है। इस पर्व को भगवती के ''विजया'' नाम पर भी ''विजयादशमी'' कहते है। साथ ही इस दिन भगवान रामचन्द्र जी चौदह वर्ष का वनवास काट कर अयोध्या पहुंचे थे। इसीलिए भी इस पर्व को ''विजयादशमी'' कहा जाता है। शास्त्रों में भी ऐसा वर्णन आया है कि अश्विन शुक्ला दशमी को तारा उदय होने के समय विजया नामक काल होता है। यह काल सर्वकार्य सिद्धिदायक होता है।

पूजा की विधि इस दिन घरों में गेरू से दशहरा माण्डकर उसकी पूजा करें, चावल, रोली, जल से फिर फूल दक्षिणा भी चढावें, सवाकिलो, चावल, मूली, गुबार-फूली-दीपक-धूप बत्ती से आरती करें। दशहरा पर दो गोबर को हांड़ी रखें, उसमें से एक में तो एक रूपया रखें, तथा दूसरी में फूल-रोली, चावल, रखकर दोनों हांड़ियों को ढंक दे। दीपक जलाकर परिक्रमा करके दण्डवत प्रणाम करें। फिर पूजा होने के कुछ देर बार हांड़ी में से रूपया निकालकर आलमारी में रख लेवें।

कथा एक बार पार्वती जी ने दशहरे के त्यौहार के फल के बारे में शिव जी से प्रश्न किया। तब शिवजी ने 'विजयकाल' की चर्चा करते हुए बताया कि शत्रु पर विजय पाने के लिए राजा को इसी समय प्रस्थान करना चाहिए। इस दिन श्रवण नक्षत्र का योग और भी अधिक शुभ माना गया है। महाराज रामचन्द्र जीने भी इसी विजयकाल में लंका पर चढ़ाई की थी। शत्रु से युद्ध करने का प्रसंग न होने पर भी इस काल में राजाओं को सीमा का उल्लंधन करना चाहिए। इस काल में शमी ने अर्जुन का धनुष धारण किया था। फिर पार्वती जी के यह पूछने पर कि शमी वृक्ष ने अर्जुन का धनुष कब धारण किया था। रामचन्द्र जी से कब प्रिय वाणी कही थी, शिव जी ने जवाब दिया:- दुर्योधन ने पाण्डवों को जुए में पराजित करके बारह वर्ष के बनवास के साथ तेरहवे वर्ष में अज्ञात वास की शर्त भी रखी थी। अगर तेरहवे वर्ष में यदि उनका पता लग जाय तो उन्हे फिर बारह वर्ष का बनवास भोगना पड़ेगा। इसी अज्ञात वास में अर्जुन ने अपना धनुष एक शमी वृक्ष पर रखा था। तथा स्वयं बृहन्नला के वेश में राजा विराट के पास नौकरी कर ली थी। जब गौ रक्षा के लिए विराट के पुत्र कुमार ने अर्जुन को अपने साथ लिया तब अर्जुन ने शमी वृक्ष पर से अपने हथियार उठाकर शत्रु पर विजय प्राप्त की थी। ''विजयदशमी'' के दिन रामचन्द्र जी ने लंका पर चढ़ाई करने के लिए प्रस्थान करते समय शमीवृक्ष के नीचे रामचन्द्र जी की विजय का उद्घोष किया था। विजय काल में शमी पूजन इसीलिए होती है।

एक बार श्री कृष्ण ने युधिष्ठिर को बताया राजन! विजयादशमी के दिन राजा को स्वयं अलकृत होकर अपने दासो और हाथी, घोड़े बग्गी, रथों को सजाना चाहिए। मंगल बाजों के साथ संगीत द्वारा मंगलाचरण करना चाहिए। आचार्यो, गुरुओं, पुरोहितों को साथ लेकर पूर्व दिशा में सीमा का उल्लंधन करना चाहिए। वहाँ वास्तु अष्टवसु-दशदिग्पाल तथा पार्थ देवताओं की वैदिक रीति से मन्त्रोचार के द्वारा पूजा करनी चाहिए। शत्रुकी मूति बनाकर उसकी छाती में बाण मारना चाहिए। ब्राह्मणों की पूजा करके फिर हाथी, घोड़ों आदि के अस्त्र-शास्त्रों का निरीक्षण करना चाहिए। फिर अपने महल में लौटना चाहिए। जो राजा प्रति वर्ष इस प्रकार 'विजयादशमी पूजन' करता है? उसकी शत्रु पर सदैव विजय होती है। दशहरा माण्डने एवं पूजने की यही रीति है।

पं० महावीर प्रसाद जोशी (हैदराबाद)

नवरात्र पूजन आवश्यकता क्यों?

पं० बृजेश शुक्ल

संपूर्ण प्राणियों के लिए शरद ऋतु और बसन्त ऋतु यमदंष्ट्र नाम से कही गई है। यह समय संपूर्ण प्राणियों के लिए एक महान कष्टप्रद है। इसमें नाना प्रकार की बीमारियाँ उत्पन्न होती है। लोगों का हित हो संपूर्ण प्राणियों का कल्याण हो इसलिए हमारे ऋषि महर्षियों ने शोध करके माँ भगवती के नवरात्र व्रत व पूजन हवन का विधान सुनिश्चित किया। प्राचीनकाल से लेकर आज तक लोग इस विद्या को आजमाकर लाभ उठा रहे हैं।

दुनियां के वैज्ञानिकों ने यज्ञ एक्सपेरीमेंट करके देखा तो उन्हें लगा यज्ञ तो वास्तव में कल्याणकारी है और उन्होंने यज्ञ का विरोध करना बंद कर दिया। अमेरिका आदि अत्याधुनिक देशों में यज्ञ धड़ल्ले से चल रहे हैं। इससे हजारों ब्राह्मणों को विदेश में रोजगार मिला हुआ है। सदाचारी, दयावान, योग्य परोपकारी ब्राह्मण के द्वारा माँ भवानी दुर्गा का विधिवत पाठ करवाने व हवन आदि करने से सब प्रकार के कष्ट समाप्त हो जाते है। सभी लोग गरीबी के कारण पाठ नहीं करवा पाते हैं किन्तु कुछ लोगों के पाठ से ही आकाश में उच्चारण के द्वारा बनी विद्युत तंरगे एंटी वायरस का काम करती हैं जिससे मानव ही नहीं संपूर्ण जग के जीवों को लाभ मिलता है। किसी खेत के सामने सप्तशती का विधिवत पाठ करने पर दश प्रतिशत फसलों में वृद्धि देखी गई है। आप इसे आजमा सकते है। वृक्ष लताओं तक इन तरंगो का असर देखा जा सकता है। दश मिर्च भोजन के साथ एक आदमी खा सकता है कोई खास फल नहीं पड़ेगा किन्तु एक मिर्च के हवन करने पर एक हजार आदमी भाग खड़ा होगा।

जलाने पर स्थूल पदार्थ परमाणु बन जाता है। जिससे उसकी प्रभाव शक्ति बढ़ जाती है जिससे पर्यावरण शुद्ध होता है। समय पर वर्षा होती है अच्छा अन्न उत्पादन होता है। जनता सुखी रहती है भगवान कृष्ण ने गीता में कहा है यद्यपि संन्यासियों को कोई कर्म करने की आवश्यकता नहीं हैं किन्तु यज्ञादि कर्म उनको भी करना चाहिए क्योंकि धर्म लोक कल्याण के लिए ही होता है। नवरात्र के समय नई फसल गेंहू, जौ, मटर आदि फसलें पक कर तैयार हो जाती है। नवान्न की यज्ञ में आहुति देकर (यानी पहले भगवान को खिलाकर) फिर नवान्न ग्रहण करना माता रानी के प्रति हमारी आपकी कृतज्ञता है क्योंकि बिना शक्ति के हम कुछ भी करने में असमर्थ है और शक्ति का श्रोत है जगत जननी माँ भगवती। जब वैज्ञानियों से पूछा गया ऊर्जा का श्रोत कहाँ है तथा उनको माँ भवानी की तरफ ही सर हिलाना पड़ा इसके अलावा उनके पास कोई चारा भी नही था। माँ पालन करने का कार्य करती है इसलिए हम बुरे समय में माँ को ही याद करते है। विष्णु भगवान को पालन करने वाला कहा गया है किन्तु विष्णु भगवान

को उत्पन्न करने वाली माँ भगवती ही हैं। अत: इन ऋतुओं के संधि काल जो अत्यन्त खतरनाक समय होता है में हमारे ऋषियों ने माँ भगवती को याद किया ओर माँ आजतक हम लोगों का कल्याण करती चली आ रही है। वैज्ञानिक नाना प्रकार के उपाय करके भी मच्छरों पर विजय प्राप्त नहीं कर सके प्राचीन काल में घर-घर में प्रतिदिन यज्ञ होते थे जिससे इतने मच्छर नहीं थे और मलेरिया और डेंगू जैसी बीमारियाँ भी नहीं थी। यदि पुन: घर-घर में नित्य छोटे-छोटे हवन की प्रक्रिया चल पड़े तो सभी प्रकार के विषैले जीवाणुओं का विनाश किया जा सकता है।

अत: नवरात्र में नौ रात्रियों में पूर्ण व्रत व पूजन करना चाहिये कुछ लोग सप्तमी कुछ अष्टमी आदि को ही नवरात्र व्रत पूजन आदि समाप्त कर देते है जो ठीक नहीं है शास्त्र में यह खण्डित माना जाता है जिसे एक दिन ही पूजन करना हो वह किसी भी तिथि को हवन आदि कर सकते है पूरे व्रत व पाठ वालों को नवी रात्रि में माँ सिद्धिदात्री का आर्शीवाद अवश्य प्राप्त करना चाहिये फिर दशवे दिन भोजन करना चाहिये माँ सिद्धिदात्री को प्रसन्न करने के लिए नवमी की रात्रि को हवन करना उत्तम माना गया है जिससे माँ भवानी की अन्य दो शक्तियाँ प्रसन्न होकर भक्त की पूरी मनोकामना पूर्ण करती है। नवरात्र में माँ भगवती का पूजन-हवन अवश्य करना चाहिए। रोग रहित होने की यह अचूक औषधि है हवन सामग्री शास्त्र के अनुसार स्वयं बनानी चाहिए बाजार की हवन सामग्री मिलावट के कारण दूषित है और शास्त्र के नियम के विरूद्ध भी है।

पं० बृजेश शुक्ल

सर्वसिद्धि भगवती मांतगी की साधना

(क) प्रारम्भिक परिचय- मतंग मुनि की कन्या के रूप में अवतरित वाणी और संगीत की अधिष्ठात्रो, गृहस्थ-जीवन को सुखी एवं समृद्ध बनाने वाली तथा पुरूषार्थ चतुष्टय की प्रदात्री भगवती मातंगी महाविद्यायों में अति प्रसिद्ध देवी हैं। श्यामला, त्रिनेत्रा, रत्न- सिंहासनस्था, चतुर्भुजा, पाश-खड्ग-खेटक-अंकुशधारिणी मातंगी भक्तों को अभय और अभीष्ट प्रदान करती है। ''महात्रिपुरसिद्धान्त' में मातंगी के मन्त्र का माहात्म्य वर्णित करते हुए कहा है कि- सप्तकोटि-महामन्त्रमध्ये शीघ्र-फलप्रद:। महाभाग्यप्रदं नृणामयमेव महामनु:।। और यह भी कहा है कि- श्रीविष्णु ने पुरकाल में मातंगी देवी की उपासना की थी। उसी के प्रभाव से वे भाग्य, सुख, क्रान्ति, स्थिति आदि से सम्पन्न हुए। मातंगी की साधना दक्षिणाम्नाय और पश्चिमाम्नाय दोनों के क्रम से होती है। उच्छिष्टा, सम्मोहनी, लघुश्यामा, राजमातंगी, वैश्यमातंगी, चण्डमातंगी, कर्णमात्रंगी तथा षडाम्नायसाध्या सुमुखीमातंगी आदि के रूप में इनकी साधना के अनेक प्रकार हैं। रति, प्रीति, मनोभवा, क्रिया, शुद्धा, अनंगकुसुमा, अनंगमदना और मदनालसा ये इनकी आठ शक्तियां हैं। इनका मन्त्रविधान इस प्रकार है-

(ख) विनियोग- अस्य श्रीमातंगीमन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिऋषि: विराट्-छन्द: श्रीमातंगोदेवता ह्रीं बीजं हूं शक्ति: क्लीं कीलकं मम सर्ववांछितार्थसिद्धये जपे विनियोग:।

ऋष्यादिन्यास- दक्षिणामूर्तिऋषये नम: (शिरसि), विराट्-छन्दसे नम: (मुखे), श्रीमातंगी देवतायै नम: (हृदये), ह्रीं बीजाय नम: (गृह्ये), हूं शक्तये नम: (पादयो:), क्लीं कीलकाय नम: (नाभौ), विवनियोगाय नम: (सर्वांगे)।

कर- हृदयादिन्यास-ह्रीं, क्लीं, हूं, ह्रीं, क्लीं, हूं (इन बीजों से करें।)

ध्यान- श्यामां शुभ्रांशुभलां त्रिकमलनयनां रत्नसिंहसनस्थां,
भक्ताभीष्टप्रदात्रीं सुरनिकरकरासेव्यकञ्जाङ्घ्रियुग्माम्।
नीलाम्भोजांशुकान्ति निशिचरनिकरारण्यदावाग्निरूपां,
पाशं खड्गं चतुर्भिवेरकमलकरै: खेटकञ्चांकुशञ्च।।
मातगेमावहन्तोमभिमत भयदां मोदिनीं चिन्तयामि।।

अन्य ध्यान पद्य इस प्रकार भी मिलता है-
श्यामागीं शशिशेखरां त्रिनयनां सद्रत्नसिंहासने,
संस्थां रत्नविचित्रभूषणयुतां संक्षीणमध्यस्थलाम्।
आपीनस्तनमण्डलां स्मितमुखीं वन्दे दधानां क्रमाद्,
वेदैर्वाहुभिरङ्कुशासिलसिके पाशं तथा खेटकम्।।

मानसोपचार पूजन करके मन्त्र जप करें। मन्त्र इस प्रकार है-
ॐ ह्रीं क्लीं हूं मातङ्यै फट् स्वाहा।

पूजा के लिए 'षट्कोण, अष्टदल और भूपुर' से यन्त्र बनाएं तथा जवापुष्प से पूजा करें।

रुद्रयामल में दिए गए अन्यान्य विधानों के साथ वाग्देवता के रूप में स्मरणीय एक 'मातंगीस्तोत्र' यहां अवश्य स्मरणीय है-

(ग) श्रीमांतगी स्तोत्रम्
आराध्य मातश्चरणाम्बुजे ते, ब्रह्मादयो विस्तृत कीर्तिमापु:।
अन्ये परं वा विभवं मुनीन्द्रा:, प श्रियं भक्तिपरेण चान्ये।।1।।
नमामि देवीं नवचन्द्रमौलेमतिग्नीं चन्द्रकलावतंसाम्।
आम्नायप्राप्तिप्रतिपादितार्थं, प्रबोधयन्तीं प्रियमादरेणा।।2।।
विनम्रदेवस्थिरमौलिरत्नैर्विराजितं ते चरणारविन्दम्।
अकृत्रिमाणां वचसां विशुक्लं, पदात्पदं शिक्षितनूपुराभ्याम्।।3।।
कृतार्थयन्ती पदवीं पदाभ्यामास्फालयन्तीं कलवल्लकीं ताम्।
मातग्नीं सद्हृदयां धिनोमि, लीलांशुका शुद्धनितम्बबिम्बाम्।।4।।
लोलादलेनार्पितकर्णभूषां, माध्वोमदोद्घूर्णितनेत्रपाम।
घनस्तनीं शम्भुवधूं नमामि, तडिल्लताक्रान्तिमनर्घभूषाम।।5।।
चिरेण लक्ष्यां नवलोमराज्यां, स्मरामि भक्त्या जगतामधीशे।
वलित्रयाढ्यं तव मध्यबिम्ब-नोलोत्पलांशुश्रियमावहन्तीम्।।6।।
कान्त्या कटाक्षै: कमलाकराणां, कदम्बमालाञ्चितकेशपाशम्।
मातग्कन्यां हृदि भावयामि, ध्यायेयमारक्तपोलबिम्बम्।।7।।
बिम्बाधरन्यस्तललामवश्यमालोललीलालकमायताक्षम्।
मन्दस्मितं ते वदनं महेशि, स्तुत्याऽनया शटरधर्मपत्नीम्।।8।।
मातग्नीं वागधिदेवतां तां, स्तुवन्ति ये भक्तियुता मनुष्या:।
परां श्रियं नित्यमुपाश्रयन्ति, परत्र कैलासतले वसन्ति।।9।।

नन्द्यावर्ततन्त्र, तन्त्रसार, दक्षिणामूर्तिसंहिता, वडवानलतन्त्र, मन्त्रमहोदधि, मेरुतंत्र आदि में इस सम्बन्ध में और विस्तार से लिखा गया है।

साभार: ऊँ साई रुद्र संदेश से

आध्यात्मिक ग्रन्थ विज्ञान के भण्डार है मिथ्या नहीं

सनातन धर्म के अनेकों ग्रंथ है। जिन में ज्ञान-विज्ञान ध्यान का खजाना भरा पड़ा है। जरूरत है उन ग्रंथों में लिखे श्लोको के रहस्यों को समझने की। वेद पूर्ण विज्ञान है जिस के छः अंग बताऐ गये है जिन में प्रमुख वेद चक्षु की संज्ञा ज्योतिष को दी गई है। जिस तरह मानव आंखों से दुनिया देखता है ठीक उसी तरह ज्योतिष वेद का सम्पूर्ण दर्शन है। पुरांण जिन को अलोचक समय-समय पर मिथ्या साबित करने पर तुले हुये हैं। काश वह उन में छिपे रहस्यों को समझते। आज का विज्ञान इन ग्रन्थों में छुपे विज्ञान से बहुत पीछे है। विज्ञानी समय-समय पर एक दूसरे की खोजो को नकारते रहते है किन्तु हमारे पूज्य ग्रन्थों में जो लिखा है वह अकाटय है। उदाहरण एक वैज्ञानिक आइनस्टाईन ने काफी समय पहले कहा था कि अणुओं को अब ओर विभाजित नहीं किया जा सकता। कुछ ही समय बाद अगले वैज्ञानियों ने अणुं के 200 टुकड़े कर दिये तथा उन में से सब से छोटे टुकड़े को इलैक्ट्रॉन की संज्ञा दी गई है।

जबकि हमारे ग्रन्थों में इन इलैक्ट्रॉन के भी छोटे टुकड़ों में होने का विवरण मिलता है।

इलैक्ट्रॉन भी अपने नाभी चक्र में एक सैकण्ड में लाखों चक्र लगाता है। विज्ञान उस चक्कर का कारण नहीं ढूंढ पाये जब कि अध्यात्मिक ग्रन्थों में भगवान विष्णु का कण-कण में वास बताया गया है तो साफ सिद्ध है कि वह इलैक्ट्रॉन के घूमने की शक्ति ईश्वर की ही शक्ति है।

कुल मिला कर हम यह कह सकते हैं कि मानव जीवन को सुखमय बनाने के पर्याप्त संसाधन हमारे अध्यात्मिक ग्रन्थों में भरे पड़े है। वह ग्रन्थ हो, वेद हो, पुराण हो, उप पुराण हो, उपनिषिद्ध हो, सहितायें हो, योग हो या तान्त्रिक ग्रन्थ सभी में विज्ञान है। और सभी मानव जीवन के लिए लाभकारी है। फेर मात्र इन ग्रन्थों में लिखी सामग्री को समझने का है। हम यहाँ एक सर्वपूज्य ग्रन्थ सौन्दर्य लहरी के कुछ प्रयोग लिख रहे है।

यह प्रयोग किसी भी साधक द्वारा शास्त्रोक्त तरीके से अगर अभ्यास में लाया जाये तो इनका बहुत अच्छा प्रभाव प्राप्त होता है। श्री भगवतपाद आदिगुरू शंकाराचार्य द्वारा रचित ग्रन्थ सौन्दर्य लहरी में उपासना का गूढं रहस्य तथा योग साधनाओं की उपयोगिता बताई गई है। इस ग्रन्थ में श्री विद्या की महिमा उपासना साधना की पूर्ण विधि श्री विद्या में प्रयोग मन्त्रों का पूर्ण विधान श्री चक्र और शरीर के छः चक्रो से भी श्री विद्या का सम्बन्ध तथा इन षट् चक्रो को जागृत करने की विधि बताई गई है जगत जननी आदि शक्ति श्री महा त्रिपुर सुन्दरी की शक्ति से ही यह सारा संसार संचालित होता बताया गया है।

आधुनिक यन्त्रों, मशीनों की तरह श्री यन्त्र को भी प्रत्यक्ष में फलीभूत होने का साधन सौन्दर्य लहरी में बताया गया है आज के युग में चाइना, जापान, अमेरिका बल्कि पूरे विश्व में एच.यू.एच. हीलिंग नाम से प्रख्यात एक पद्धति द्वारा किसी भी रोगी के चक्रो को शक्ति देकर उससे सम्बन्धित रोगों से मुक्ति देने की क्षमता प्रदान हो चुके है, उन षट्चक्रों को समझने और जाग्रत करने के अति सरल संसाधन इस सौन्दर्य लहरी नामक ग्रन्थ में मौजूद हैं यथा ब्रह्मण्डा तथा पिण्डा के अनुरूप शिव शक्ति साधक आदि गुरू शंकराचार्य ने जिस तरह इस ग्रन्थ के माध्यम से जो जो क्रियायें एवं कार्यो की साधना इस ग्रन्थ में लिखी है वह पूर्णतयः विज्ञान पर आधारित व सत्य है।

हम यहा सौन्दर्य लहरी से सम्बन्धित कुछ प्रयोग प्रस्तुत कर रहें है और साथ ही स्पष्ट कर दें कि किसी किताब या पत्रिका में से पढ़कर किसी ऐसे प्रयोग को बिना गुरू तथा इष्ट के उस पर प्रैक्टिकल करने के कोशिश न करें। क्योंकि ये अति प्रभावित विद्या गुरू शिष्य परम्परा के तहत ही इष्ट कृपा से कार्य करने में सक्षम हो सकती है।

दुष्ट शत्रुओं को मित्र बनाने हेतु एक प्रयोग मन्त्र की रीटं वैरिञ्चयं परिहर पुरः कैटभभिदः कठोरे कोटीरे स्खलसि जहि जम्भा रिमुकुटम् प्रणभ्रेष्वेतेषु प्रसमभुपयातस्य भवन भवस्याभ्युथाने तव परिजनोवितर्विजयते।

इस मन्त्र को सिद्ध करने हेतु गुरू आज्ञा के पश्चात 45 दिनों तक प्रतिदिन 1000 बार जप करें जप से पहले सुवर्ण पत्र पर या भोजपत्र पर ऊपर लिखित यन्त्र का चित्र यहाँ बनाना है। मन्त्र की दशांश आहुतियां राई, पीली सरसों और देशी घी से दें। यह सारा कार्य शुद्ध होकर आसन पर बैठकर और यन्त्र को आगे रखकर करें। भोजपत्र पर यन्त्र बनाने के लिये शुद्ध गोरोचन या शुद्ध अष्टगन्ध का प्रयोग करे। प्रयोग पूर्ण होने पर यह यन्त्र सिद्ध हो जायेगा। तत्पश्चात इस यन्त्र को धारण कर किसी भी शत्रु से बात करें वह शत्रुता भुलाकर मित्रता करेगा।

अकाल मृत्यु से रक्षा हेतु प्रयोगः- सुधामप्यास्वाद्य प्रतिभयजरा मृत्यु हरणी विपद्यन्ते विण्व विधिशतमखाद्या दिविषदः करालं यत्क्ष्वेलं (ऽ) कवलितवक्तः कालकलना न शम्भोस्तन्मूलं तव जननि ताटङमहिमा।

सर्वप्रथम स्वर्ण पत्र पर या भोजपत्र पर इसका यन्त्र बनाना है और यन्त्र के आगे 45 दिन निरन्तर उपर लिखित मन्त्र का जाप करें तथा कुल जप का दशांश घी की आहुतियों को हवन करें यन्त्र सिद्ध हो जायेगा। इस यन्त्र को गले में धारण करने से कभी भी अकाल मृत्यु नहीं हो सकती। प्रमाणित ग्रन्थ सौन्दर्य लहरी से प्राप्त कुछ अद्भुत प्रयोग।

Final Sept.qxd 8/29/2011 12:31 PM Page 20

राधा अष्टमी पर विशेष

श्री राधा जन्माष्टमी व्रत महोत्सव का महात्म्य

जैसे श्री कृष्ण ब्रह्म स्वरूप है तथा प्रकृति से परे है, वैसे ही श्री राधा जी भी ब्रह्म स्वरूप तथा प्रकृति से परे है। भगवान की भांति ही उनका समय-समय पर आविभोव तिरोभाव हुआ करता है। अत: वे भी श्री हरि के समान ही नित्य और स्वरूप है।

यथा ब्रह्म स्वरूपश्च श्री कृष्ण: प्रकते: पर:।
तथा ब्रह्म स्वरूपा च निर्लिप्ता प्रकृते परा।।
आविर्भावस्तिरो भावस्तस्या: कालेन नारद।
न कृत्रिमा च सा नित्या सत्य रूपा यथा हरि:।।

इसी प्रकार इनका आविर्भाव महोत्सव तथा उसका महत्व भी प्राचीनतम और नित्य है पक्षपुराण, ब्रह्म खण्ड के सप्तम अध्याय में श्री नारद ब्रह्म के संवाद रूप में एक इतिहास श्री मिलता है। जो नारद जी के पूछने पर ब्रह्म जीने राधा जन्माष्टमी व्रत के महात्म्य का प्राचीन प्रसंग सुनाया। सच्चिदान भगवान भी कृष्ण नित्य है। उसी प्रकार सच्चिदानन्दमयी भगवती श्री राधाजी भी नित्या है। वास्तव में भगवान की निजस्वरूप शक्ति होने के कारण वे भगवान से सर्वथा अभिन्न है। समय-समय पर लीला के लिए आविर्भूत-तिरोभूत हुआ करती है। पहले सतयुग में एक मृगनयनी, शुभांगी, चारूहासिनी, अति-सुन्दरी, लीलावती नाम की वीरागना थी। उसने बहुत बड़े-बड़े कठोर पाप किये थे। एक दिन धन की लालसा से वह अपने नगर से निकल कर एक दूसरे नगर में गई। वहाँ उसने एक जगह बहुत लोगों को देखा। वे लोग एक सुन्दर देवालय में राधाष्टमी व्रत का उत्सव मना रहे थे। और हर्षोल्लास के साथ तन्मय होकर श्री राधा जी की मूर्ति की पूजा कर रहे थे। कोई गा रहे थे। नृत्य कर रहे थे, स्तुति-पाठ कर रहे थे। कोई ताल-मृदंग- ढोल-मजीरा-वेणुबजा रहे थे। पूजा अर्चना श्रृंगार कर रहे थे। इस प्रकार उन लोगों को महोत्सव पारायण देखकर वारागनाओ ने कौतूहल पूर्वक उन लोगों के पास जाकर पूछा- हे धर्मात्माओं! आप खुशी से भरे यह क्या कर रहे हैं? मैं विनय पूर्वक पूछ रही हूँ। कृपा करके बताइये तब राधा ने उन व्रत धारियों से कहा- भाद्रपदमास के शुक्ल पक्ष की अष्टमी तिथि में दिन के समय मध्याहनकाल में अभिजित मुर्हूत और अनुराधा नक्षत्र के योग में राधा जी का वृषभानु के यहाँ यज्ञ भूमि में प्राकट्य हुआ था। हम उसी का व्रत करके महोत्सव मना रहे हैं। इस व्रत से मनुष्यों के बड़े-बड़े पापों का नाश हो जाता है। उनकी बात सुनकर वारागना लीलावती ने भी व्रत करने का निश्चय करके व्रत किया। दैव योग से उस को सर्प ने डंस लिया, इससे उसकी मृत्यु हो गई। उसने बड़े पाप किये थे, अतएव हाथों में लिये भयानक यमदूत आ गये और उसे डांटने लगे। इसी बीच शंख चक्र और गंदा-पदम धारण करने वाले विष्णु दूंतो ने आकर चक्र से यमपाश को काट दिया। वह वीराग्ना सर्वथा पापमुक्त हो गयी और उसे वे विष्णु दूत विमान

पर चढ़ाकर ''गोलोक'' नामक मनोहर दिव्य विष्णुपुर में ले गये। इस प्रकार पापों का नाश करने वाले और राधा माधव को अत्यन्त प्रिय राधाष्टमी व्रत को जो लोग नहीं करते, वे मंद बुद्धि है। उन स्त्री-पुरूषों को यम लोक में जाकर नरकों में गिरना पड़ता है और पृथ्वी पर जन्म लेने पर घोर दु:ख भोगना पड़ता है।

श्री राधा जी भगवान विष्णु की अभिन्न मूर्ति है। इन की पूजा सदा से होती आयी है और होनी चाहिए। जन-जन को चाहिए कि वह सर्वत्त श्री राधाजन्माष्टमी व्रत करने तथा महोत्सव मनाने का सप्रयास करें । जो मनुष्य 'राधा राधा' कहता है। तथा स्मरण करता है पूजा करता है राधा राधा उच्चारण करता रहता है। वह महाभाग श्री वृन्दावन में श्रीराधा का सहचरी होता है। इस विश्व में यह पृथ्वी धन्य है, जिनका ध्यान बड़े बड़े मुनिवर करते है जो ब्राह्मण आदि देवताओं की परमाराध्या है। जिन की सेवा देवता लोग दूर से ही करते रहते है। उन राधिका जी को जो भजता है उस को मैं भजता हूँ। जो मनुष्य कृष्ण के साथ राधा का नाम कीर्तनकरता है, उसके महात्म का वर्णन करना मुश्किल है। राधा नाम कभी निष्फल नहीं जाता, यह सब तीर्थो का फल प्रदान करता है। श्री राधा जी सर्वतीर्थमयी है तथा सर्वेश्वर्यमयी है। राधा कृष्ण जिनके इष्ट देवता है, उनके लिए यह व्रत श्रेष्ठ है। उनके घर में श्री हरि देह से मनसे कदापि अलग नहीं होते, जो मनुष्य भक्ति पूर्वक श्री राधा जन्माष्टमी व्रत कथा, श्रवण करता है, वह सुखी, मानी, धनी, और सर्वगुण सम्पन्न हो जाता है। जो मनुष्य भक्तिपूर्वक राधा जी का मन्त्र जाप करता है, नाम स्मरण करता है, वह धर्मार्थी होतो धर्म प्राप्त करता है अर्थार्थी होतो धनपाता है, कामार्थी पूर्ण काम हो जाता है और मोक्षार्थी को मोक्षप्राप्त होता है। जो मनुष्य सर्वदा अनन्य शरण होकर जब श्री राधा की भक्ति प्राप्त करता है तो सुखी विवेक और निष्काम हो जाता है।

पं0 महावीर प्रसाद जोशी

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर विशेष प्रयोग

शत्रु बाधा निवारण तथा वशीकरण सिद्धि का श्रीकृष्ण प्रयोग

शास्त्रों में कई प्रकार के यन्त्र-तन्त्र मन्त्रों के प्रयोग द्वारा कार्यो की सिद्धियाँ की जाती है विशेष रूप से साधक अपनी साधना की पूर्ति हेतु जयन्ती पर्व उत्सव पर ही यह प्रयोग करते हैं। जिससे शीघ्र ही सफलता प्राप्त होती है।

भगवान श्री कृष्ण का पूरा जीवन शत्रुओं का परास्तकर, धर्म की स्थापना करना जहाँ धर्म है वहीं श्री कृष्ण है। जब शत्रु बाधा बहुत बढ़ जाय तो भगवान श्री कृष्ण से प्रेरणा लेकर श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व पर शत्रु बाधा प्रयोग कर सकते है।

(१) शत्रु बाधा श्री कृष्ण प्रयोग

जन्माष्टमीपर्व पर अर्द्ध रात्रि के बाद शत्रुहंता प्रयोग सम्पन्न किया जा सकता है। ''इसमें श्री कृष्ण सुदर्शन रक्षा कवच'' के अलावा पाँच गोमती चक्रों की स्थापना कर के सविधि पूजन करना चाहिए।

अर्द्धरात्रि के बाद पूजा स्थान में एक बड़ा दीपक जलाकर, धूप, अगरबत्ती लगावे फिर दक्षिण दिशा की ओर मुँह करके सबसे पहले श्री कृष्ण का पूजन करें पूजन करते समय गोमती चक्रों की तरफ देखकर ''सुचक्रायै स्वाहा'' मन्त्र का जाप करते रहें। मन्त्र पर कुकुम, केसर, चावल, चन्दन, पुष्प, गन्ध, इत्तर चढ़ाते समय निम्न मन्त्रों का उच्चारण करें।

(1) ॐ नमः। इसके बाद अपनी शत्रु बाधानिवारण हेतु ''श्री कृष्ण रक्षा सुदर्शन कवच'' पर साधना करते हुए अपना सारा ध्यान लगाकर निम्नमन्त्र का जप सम्पन्न करें।

ॐ श्री कृष्णाये असुराकृान्त भरहारिणीनमः

इस मन्त्र की पांच माला (वैजयन्ती) से उसी स्थान पर बैठकर जप करें। तथा दूसरे दिन प्रातः सुर्दशन यन्त्र व पाँच गौमती चक्रों को एक लाल कपड़ों में बांधकर भूमि में गाड़ दे। इस प्रकार सविधि इस प्रयोग को करने से प्रबल शत्रु भी शान्त हो जाते है।

वशीकरण सिद्धि प्रयोग

श्री कृष्ण की साधना वशीकरण साधना प्रयोग में सर्वश्रेष्ठ मानी गई है। कृष्ण जन्माष्टमी के दिन सांय काल यह पूजन सम्पन्न किया जाता है। सबसे पहले अपने सामने एक कांसी की थाली में ''वशीकरण यन्त्र'' स्थापित करें। फिर साधक शुद्ध भाव से एकाग्रचित होकर नूतन वस्त्र पहन कर सुगन्धित पदार्थों से यह प्रयोग करें।

वातावरण स्वच्छ एवं साफ होना चाहिए। पूर्व दिशा की तरफ मुंह करके बैठकर प्रसन्न चित्त से इत्तर व सुगन्धित वातावरण में

यंत्र को एक थाली में बिराजमान करके फिर सविधि केशर युक्त चन्दन से पूजा करें और एक पुष्पमाला मन्त्र पर चढ़ावे दूसरी माला स्वयं धारण करें। वशीकरणयन्त्र का पूजन सम्पन्न करें। शास्त्रों के अनुसार इस पूजन में गोपी चन्दन का भी विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है। इसके अलावा पूजा मे पुष्प, मोली, सुपारी, कलावा, व काले अंजन का भी प्रयोग किया जाता है। इसे भी मंत्र जाप के साथ-साथ सम्पन्न होने के बाद साधक मन्त्र का जाप पूरा करें। मन्त्र निम्न प्रकार से है।

।क्लीं केशवाय नमः।।

इस मन्त्र की माला जप सम्पन्न करें। यदि कोई रासलीला के मध्य में स्थित श्री कृष्ण का ध्यान कर उक्त मंत्र का दस हजार बार जाप करता है तो उसे छः माह के अन्दर ही अपनी मन पसन्द की कन्या प्राप्त होती है।

''गोतमीतंत्र'' में बताया गया कि इस पूजन में चढ़ाई गई सामग्री को चूर्ण बनाकर यदि थोड़ी सी मात्रा में ही जिसे आप प्रसाद रूप में देंगे तो वह, साधक के पूर्ण वश में हो जाता है।

पं० महावीर प्रसाद जोशी, हैदराबाद

मासिक पत्रिका सर्वज्ञमुनि ज्योतिष दपर्ण

समस्या आपकी, समाधान हमारा, ज्योतिष एवं मंत्र विज्ञान से

आपके सुझाव
हमारा सौभाग्य

मासिक पत्रिका सर्वज्ञमुनि ज्योतिष दर्पण आपके हाथों में है। वेद सम्मत ज्योतिष विज्ञान के अथाह सागर में से कुछ मोती चुनकर आपकी सेवा में प्रस्तुत करने का प्रयास इस पत्रिका के माध्यम से किया गया है। हम इस प्रयास में कहां तक सफल हुए हैं। इसका निर्णय सुधि पाठकों के अतिरिक्त और कौन कर सकता है।

आपसे करबद्ध निवेदन है कि पत्रिका पढ़ने के उपरान्त अपनी प्रक्रिया से हमें अवश्य अवगत करायें ताकि हम इसमें निरन्तर सुधार करने की दिशा में अग्रसर हो सकें। हमें आपकी प्रतिक्रिया का बेसब्री से इंतजार रहेगा।

रमा देवी
प्रबंध सम्पादक

हमारे विद्वान ज्योतिषी आपके उस प्रश्न का इंतजार करेंगे जिसका उत्तर जानने के लिए आप बेहद उत्सुक है। एक बार में एक ही प्रश्न करेंगे तो कृपा होगी।

अपने प्रश्न के साथ नीचे दिये गये प्रपत्र को साफ-साफ भरकर भेंजे। इस प्रपत्र को रजिस्टर्ड डाक द्वारा प्रेषित करें अन्यथा आपके प्रश्न का उत्तर देने में म असमर्थ होंगे।

लग्न कुण्डली

(हो सके तो कुण्डली में अंक एवं ग्रह भर दें।)

नाम..

जन्मतिथि..........................महीना.......................सन्...............

जन्म स्थान.......................जिला......................प्रदेश...............

जन्म समय...दिन या रात..................

महादशा.................................अन्तरदशा.................................

एवं प्रत्यंतर..(अगर लिख सको तो)

आपका पूरा पता...

आपका प्रश्न...

सम्पादकीय कार्यालयः
सी-8, मेरठ रोड, निकट एचडीएफसी बैंक, लोहिया नगर, गाजियाबाद मो0-9871050422, 9971980265, 9871544842, फोनः 0120-2700290

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्यता	**3100 रुपये**
दस वर्षीय सदस्यता	**2100 रुपये**
पांच वर्षीय सदस्यता	**1100 रुपये**
एक वर्ष सदस्यता	**250 रुपये**

प्रत्येक वर्ष सदस्य को 12 अंक दिये जायेंगे। शुल्क पत्रिका के नाम चैक या ड्राफ्ट द्वारा ही स्वीकार्य होगा।

पत्रिका डाक द्वारा भेजी जायेगी।

प्रबंध सम्पादक

विज्ञापन दर

अन्तिम कवर पेज रंगीन	15000 रुपये
दूसरा कवर पेज रंगीन	12000 रुपये
तीसरा कवर पेज रंगीन	12000 रुपये
भीतरी पृष्ठ ब्लैक एण्ड व्हाईट	5000 रुपये
आधा पृष्ठ ब्लैक एण्ड व्हाईट	3000 रुपये
चौथाई पृष्ठ ब्लैक एण्ड व्हाईट	1500 रुपये
स्पेशल बॉक्स	1000 रुपये

नियमित विज्ञापन पर 20 प्रतिशत की छूट होगी

विज्ञापन प्रबंधक

Final Sept.qxd 8/29/2011 12:31 PM Page 23

सर्व कार्य सिद्धि हेतु एक अति प्रभावशाली यन्त्र प्रयोग

यन्त्रों का संसार बहुत विराट है। अंको और शब्दों का अथाह ब्राह्मण्ड के साथ बहुत गहरा सम्बन्ध है शब्द ही ब्रह्म है। और शब्दों का आधार अंक, अंको का हेर-फेर अंको की माया, ब्रह्मा, विष्णु, महेश सारा संसार इसी के समाया हिन्दू धर्म ही नहीं दुनिया के सभी धर्मो में आदिकाल से यन्त्रों का प्रचलन रहा है। सर्वज्ञ मुनि ज्योतिष एवं मन्त्र विज्ञान अनुसंधान केन्द्र पर आधुनिक यन्त्रों उपकरणों से प्रमाणित करने के लिए सक्षम है। क्यों कि यन्त्र और मन्त्र का प्रभाव जो एक विशेष प्रकार की ऊर्जा के रूप में होता है। आधुनिक उपकरणों से प्रमाणित किया जा सकता है। सभी धर्म सम्प्रदा में यन्त्रों का जो खजाना है। वह तीन गुणों में विभक्त है। सत्व गुण, रजोगुण, तमोगुण और इन तीनों गुणों के तहत बनने वाले समस्त यन्त्र पुष्टिकारक, अनिष्टकारक स्वास्थ्यवर्धक एवं तान्त्रिक षट्कर्मो हेतु अति प्रभावशाली है किन्तु कुछ यन्त्र ऐसे हैं। जिनका अति तीक्ष्ण प्रभाव महसूस किया गया है। उनमें शत्रु नाश हेतु माँ बगला मुखी यन्त्र, सुख समृद्धि हेतु पन्द्रिया या बीसा यन्त्र इत्यादि अनेकों यन्त्र है। जिनका व्यवसायी लोग व्यापारिक रूप से निर्माण कर रहे है। किन्तु कुछ यन्त्र अब भी इन व्यवासयियों की पकड़ से बाहर है। उन्हीं यन्त्रों में से हम एक यन्त्र समाज के कल्याणार्थ इस अंक में प्रकाशित कर रहे है तथा साथ ही यन्त्र व्यवसायियों से नम्र भाव से अनुरोध कर रहे है। कि वह इस मन्त्र के भी ठप्पे बनवाकर ताम्बे के पतरों पर लगवाकर बेचने का प्रयास न करें। हमारे आध्यात्मिक वाङमय में आध्यात्मिक सामग्री देने से पहले पात्र कुपात्र देखना अति आवश्यक बताया है तथा बाजार में बिकने वाले यन्त्र को पात्र कुपात्र कोई भी खरीद लेगा। हमारे पिछले 30 सालों का ही ये सिला है कि आज अगर कोई ये कहता है कि यन्त्र प्रभावहीन है। तो हम उसे खुला चैलेंज देते है। कि वह हमारे अनुसंधान केन्द्र पर आये तथा हमारे केन्द्र पर निर्मित यन्त्रों के प्रभाव को सत्यापित करे काम के होने या न होने के पीछे कुछ वजह कुछ कारण होता है। यन्त्र विज्ञान में स्पष्ट निर्देश होते है कि यन्त्र के निर्माण के समय, स्थान, पदार्थ की पूर्ण महता होती है। और व्यवसायिक दृष्टि से ठप्पे लगे हुए बाजार में बिक रहे यन्त्र प्रभावहीन ही होंगे। अनुसंधान केन्द्र द्वारा इस समृद्धि एवं सर्वकार्य सिद्धि यन्त्र जिसको हम प्रकाशित कर रहें का सैकड़ों लोगो ने बहुत तीक्ष्ण प्रभाव महसूस किया इन्ही सब स्थितियों को देखते हुए यन्त्र विवरण सहित प्रकाशित किया जा रहा है यथा। इस यन्त्र को बनाने हेतू सर्वोतम समय नवरात्रि का है। प्रथम नवरात्र साफ शुद्ध भोजपत्र को माँ के चरणों में रखकर नौ दिन के लिये अखण्ड दीपक जलाये और एक पाठ श्री दुर्गा सप्तशती का करें। पाँचवे नवरात्रे का एक पाठ कर लेने के बाद कुमकुम असली गोराचन से अनार की कलम द्वारा साफ शुद्ध अवस्था में सात्विक भाव लेकर यन्त्र के प्रारूप को तैयार करे। और एक माला देही सौभाग्य, आरोग्य देही में परमं सुखं रूप देही जयं देही यशाहो देही द्विषो जेही। छठे, सातवेः, आठवे नवरात्रे रोजाना पूर्व की भाँति एक पाठ दुर्गा सप्तशती का करे और एक माला उपरोक्त मन्त्र की करे। नवमी के दिन प्रातः शुद्ध सात्विक भाव से पूरी दुर्गा सप्तशती (6 अंगो) के मन्त्रों द्वारा मेवा, घी, मिश्रित खीर की आहुतियाँ दे यन्त्र माँ के चरणों में ही रहे तथा दशमी के दिन माँ के प्रसाद रूप में उस यन्त्र को लम्बाई चौड़ाई में तीन-तीन तह लगाकर मोड़े तथा तह लगाते हुए माँ महालक्ष्मी महासरस्वती तथा महाकाली का ध्यान करे तथा इन्ही तीन माँ के रूपों को याद करते हुए उस यन्त्र पर कलावे की डोरी को लपेटे तत्पश्चात् चाँदी के ताबीज में भरकर लाल धागे में पिरोकर धारण करें इस मन्त्र प्रयोग से आप चहुमुखी उन्नति करेंगे स्वस्थ, शरीर, स्वस्थ बुद्धि होगी तथा धर्म, अर्थकाम मोक्ष प्राप्ति के रास्ते प्रशस्त होंगे।

सर्व कार्य सिद्धिप्रद अदभुत यन्त्र

ईशान		पूर्व	आग्नेय
	अं अः ल क्षः	अ आ क इ ई ख ग घ ड. च छ ज झ ञ	
उत्तर	ऊँ औं श ष स ह ४	ऋ ॠ त थ द ध न	दक्षिण
	ए ऐ य र ल व ४	लृ लॄ ऋ ॠ प फ ब भ म त थ द ध न	
वायव्य		पश्चिम	नैर्ऋत्य

माता से भी बढ़कर है हरड़

दूध में अदरक डाल कर गुड़ के साथ नियमित लेने से कब्ज जाती है। माता कभी कोप भी कर सकती है, किंतु सेवन की गयी हरीतकी कभी भी कुपित नहीं होती, सदा हित ही करती है।

हरीतकी सदा पथ्या मातेव हितकारिणी।
कदाचित् कुप्यते माता नोदरस्था हरीतकी॥

(1) नमक के साथ हरड़ खाने से रोगी का उदर सदा शुद्ध रहता है। हरड़के चूर्ण में नमक 2/4 भाग ही मिलाना चाहिये। ज्यादा नमक मिलाने पर दस्तावर हो जायेगा।

(2) घी के साथ हरड़का चूर्ण चाटने से हृदयरोग नहीं होता।

(3) प्रतिदिन प्रातः शहद के साथ हरड़का चूर्ण चाटने पर शक्ति बढ़ती है।

(4) सोते समय शक्कर और हरड़का चूर्ण मिलाकर दूध के साथ लेने से पेट साफ रहता है।

(5) हरड़के चूर्ण को मक्खन-मिस्त्री के साथस चाटने से मेधा-शक्ति बढ़ती है तथा स्मरण-शक्ति श्रेष्ठ होती है।

(6) जवाहरड़को गोमूत्र में भिगोकर नमक लगाकर मिटटी के तवेपर धीरे-धीरे दो-तीन घंटेतक मध्यम आँच पर सेकने से हरड़ हल्की हो जायेगी। ठंडी होनेपर डिब्बे में भरकर रख ले तथा दिन में तीन बार एक-एक हरड़की चूसते रहने से श्रासरोग तथा खाँसी मिटती है।

(7) जिसकी आँखें कमजोर हों, उसे चाहिये कि प्रतिदिन बड़ी हरड़ घृतके साथ चाटे और ऊपर से मिश्रि-युक्त गायका दूध पीये। इससे आँखों की ज्योति ठीक होती है तथा मेधा-शक्ति बढ़ती है।

(8) पञ्चगव्यके साथ हरड़का चूर्ण सेवन करनेवाला दीर्घायु होता है।

डा० गोपाल

गुणकारी अदरक

(1) जिसे भोजन हजम न होता हो, उसे चाहिये कि भोजन करने से पहले चार-पाँच टुकड़े अदरक में नमक तथा नीबू का रस मिलाकर ले और उसके बाद भोजन करे।

(2) अदरक के टुकड़े चूसने से खाँसी मिट जाती है।

(3) अदरक को शाक-दाल में डालकर खाने से पेट साफ रहता है।

(4) श्रासके रोगी को सदा अदरका का रस तथा शहद मिलाकर गुनगुना करके चाटते रहना चाहिये।

(5) केवल अदरका रस-सेवन भी निमोनियातकमें लाभदायक होता है।

(6) अदरक अलग-अलग ऋतुओं में अलग-अलग

(7) अदरक गुड़ के साथ सेवन करने से पित्त विकार शान्त होते हैं। मन्दाग्नि दूर होती है। वस्तुओं के साथ सेवन करने से लाभ मिलता है, जैसे वर्षा- ऋतु में अदरक के टुकड़ों को नमक लगाकर खाने से अग्निमन्द नहीं होती।

न्याय पालिका को प्रबल करेगा उच्च का शनि

चीफ जस्टिस ग्रह शनि 16 नवम्बर 2011 से अपनी उच्च राशि तुला में प्रवेश कर रहा है तथा इस से पहले राशि आरोही स्थिति में था। यही कारण था कि पिछले ढाई वर्ष में न्यायालयों की महत्ता बढ़ी कारण मात्र शनि थे तथा शनि के तुला राशि में पहुँचने पर न्यायालयों की भूमिका जनता के हित में सराहनीय हो जायेगी। कन्या तुला वृश्चिक राशि वालो की शनि की साढे साती का प्रभाव अलग-अलग स्थिति में भुगतना पड़ेगा।

कन्या तुला राशि वालो के लिए शनि अधिक कठोर नहीं होगे तथा वृश्चिक राशि वालों के लिए शनि की साढ़े साती का प्रभाव सख्त रहेगा।

तथा न्यायालयों में कार्यरत न्यायाधीश जिन की वृश्चिक राशि होगी वह अभियुक्तों को कठोर से कठोर दण्ड देंगे।

राजनीतिज्ञों में जो भ्रष्ट है वह मानसिक रूप से पीड़ित रहेगे। तथा मेहनती राजनेता आराम महसूस करेंगे।

आप को इस पत्रिका में छपी सामग्री कैसी लगी इस विषय पर अपने विचार लिख कर आप पत्रिका के पते पर भेज सकते है। हमें आप के सुझावों एवं विचारों का सम्मान करेंगे तथा पत्रिका में प्रकाशित करेंगे। पत्रिका के प्रति आप के सुझाव एवं विचार पत्रिका के अच्छे प्रकाशन में हमें सहायक सिद्ध होंगें।

प्रबन्ध सम्पादक-
रमा देवी मो0- 9871980265
सी-8, लोहिया नगर गा0 बाद
E-mail :- www. jyotishdrpn@gmail.com

श्राप भाग्यहीन बनाता है

कभी-कभी ऐसी जन्मकुण्डलियां देखने को मिल जाती है। जिन्हें देखने में कोई दोष भी नजर नहीं आता। किन्तु जीवन दु:खमय और अभावों से भरा होता है। जबकि कुछ दोष जन्मकुण्डलियों से स्पष्ट हो जाते है। निश्चित किसी दूषित कार्य के कारण ही हमें अपने जीवन में दु:ख मिलता है।

जो दूषित योग जन्मकुण्डली में स्पष्ट होते हैं। उनका कारण पूर्व जन्म में किये गये दूषित कर्म तथा दोष मुक्त जन्मकुण्डली के बाद जो लोग दु:ख भोगते है। उसका कारण उनके इसी जन्म के दुषित कर्म अथवा श्राप के कारण होता है। यहाँ एक व्यक्ति की दु:खमयी कथा हम पाठकों के लिये लिख दे। हमारे मिलने वाले परिवार का एक व्यक्ति अपना ट्रक स्वयं चलाकर दिल्ली से गोहाटी जा रहा था रास्ते में रात के समय जंगल में एक हिरण का बच्चा ट्रक के अगले टायर के नीचे आ गया तथा उसका कमर और पिछली टांगों का हिस्सा बुरी तरह कुचल गया। उस ड्राइवर ने ब्रेक लगाकर नीचे उतरकर वह सारा हाल देखा तथा ये देखा कि उस हिरण के बच्चे की सड़क के किनारे अपने कुचले हुए बच्चे की दुदर्शा पर आसूं बहा रही थी। (अज्ञानता वश हुए इस पाप ने उसके अन्त:करण को दु:खी किया क्योंकि वह बच्चा कुछ देर तड़प कर मर गया था। तीन चार वर्ष बाद उस ट्रक डाइवर का विवाह हुआ तथा उसके घर में जो पहला बच्चा पैदा हुआ उसका शरीर कमर से नीचे निर्जीव था वह बच्चा लगभग 27 साल तक जीवित रहा और जिस दिन उस बच्चे के पिता ट्रक ड्राइवर की मृत्यु हो गई और उसके कुछ दिन पश्चात ही उस कमर से र्निजीव बच्चे की भी मृत्यु हो गई। बच्चे के पिता की जन्मकुण्डली में सन्तान सम्बन्धी किसी प्रकार का कोई दोष नहीं था तथा बच्चे की जन्मकुण्डली में चौथे दसवे से काल सर्पयोग बन रहा था। ऐसा ही उदाहरण एक और बता दे एटा कोतवाली में तैनात क्षत्रिय जाति का एक इस्पेक्टर था जिसकी किसी डकैत के साथ मुठभेड़ में गोली लगने से मृत्यु हुई थी। उनके एक बेटे ने खुद को गोली मारकर आत्माहत्या कर ली थी उस विषय पर भी ये पता चला कि उन्हीं की थाने में तैनाती के दौरान उस थाने में एक निर्दोष लड़के की किन्हीं कारणों से मृत्यु हो गई थी मृतक बच्चे की माँ ने वही थाने में खड़े होकर एस.एच.ओ. को रोकर श्राप दिया था कि जैसे मेरा बेटा मरा वैसे ही तेरा बेटा मरेगा। कुछ समय पश्चात् उस अधिकारी के बेटे ने आत्महत्या करने वाले लड़के की जन्मकुण्डली में ऐसा कोई दोष नहीं था फिर भी ये घटना घटी। इसे हम क्या माने?

ये दोनो घटनाये आज भी हमें विचलित करती हैं और सोचने पर मजबूर करती है कि शाप कभी मिथ्या नहीं जाता। अनेकों ऐसी

सच्ची कहानियाँ है। अब सवाल ये है कि क्या इस जन्म या पूर्व जन्म के श्रापों से बचने का कोई उपाय है? इस जन्म में किये गये पापों का स्मरण करके उनका प्रायश्चित किया जा सकता है। किन्तु पूर्व जन्म में किये गये दूषित कर्म जिन्हे हम जानते नहीं तो उनका निस्तारण कैसे हो तो इस स्थितियों मे हमे सहारा मिलता है लग्न कुण्डली से पूर्वकालीन विद्वान ज्योतिषीयों ने इस पर बहुत शोध किये अपने दिव्य ज्ञान का प्रयोग किया और वह ज्ञान ग्रन्थों में संजोकर आने वाली पीढ़ियो के लिये रख दिया।

हम उन ग्रन्थों का बारीकी से अध्ययन करके आज भी ये जानने मे सक्षम है कि हमारे जीवन में जो दुखद् घटनायें घट रही हैं उनका क्या कारण हो तथा उनका क्या निस्तारण है। मोटे तौर पर ज्योतिषीय ग्रन्थों से यह स्पष्ट होता है कि पिता पितामह के श्राप से तथा प्रशासन के श्राप से अलग जन्म में सूर्य नीच का होता है, माता-दादी और सुख देने वालों के श्राप से चन्द्र नीच का होता है।

अपने रक्षक द्वारा दिये गये श्राप से मंगल नीच का, बहन, बूआ, बेटी, के श्राप से बुद्ध नीच का, ब्राह्मण सन्यासी के श्राप से गुरू नीच का, पत्नी, प्रेमिका के श्राप के शुक्र नीच का, छोटी, जाति के व्यक्ति को प्रताड़ित करने तथा उसका धन हरने से शनि नीच का तथा मृत, पूर्वजों, पित्तरो, कुल देवताओं के श्राप से राहु केतु नीचे के होते है। नीचे राशि गत बैठा प्रत्येक ग्रह अपने कारक कार्यो में अपना प्रभाव अवश्य दिखाता है जैसे सूर्य नीच का हो तो यश नहीं मिलता शासकीय स्तर पर दण्ड भोगना पड़ता है,आत्मा कुण्ठित रहती है। चन्द्रमा नीच का हो तो लक्ष्मीहीन होकर, अन्त: करण से दुखी होता है। मंगल नीच का हो तो क्रोधी, हिसंक तथा शारीरिक क्षमता नष्ट होती है। मानसिक र्निबलता होती है। बुध नीच का हो तो गूंगा, बहरा होता है। गुरू नीच का हो तो अधर्मी होता है पारिवारिक स्थिति खराब होती है। सामाजिक स्तर पर अपमान होता है शुक्र नीच का हो तो नपुसंक होता है और कुरूप होता है और शनि नीच का हो तो निर्धन व कर्जदार होता हो, कार्यहीन, घर से वंचित रहता है, केतु नीच के हो तो पापी, पाखण्डी तथा पितृ दोष युक्त होता है। केतु नीच होने पर जुए से प्रभावित होता है। अत: हमे अपने जीवन में कभी भूलकर भी जाने या अनजाने में बुरे कार्य, किसी को दु:खी करना किसी का धन हरना, या कोई भी ऐसा कार्य नहीं करना चाहिये जिसका दण्ड हमे जन्म जन्मान्तर भोगना पड़े।

पं0 सतेन्द्र भारद्वाज
सम्पादक
सर्वज्ञमुनि ज्योतिष दर्पण

Final Sept.qxd 8/29/2011 12:31 PM Page 26

रत्न (नग) क्यों प्रभावी

रत्न अथवा नग एक विशेष रंग, परिमाण व आकृति-युक्त होते हैं। तथा इस प्रकार बनाए जाते हैं कि पहनते समय वह शरीर को छुए। नग के द्वारा सूर्य की किरणे सम्बंधित ग्रह से परावर्तित होकर अत्याधिक तीव्र गति व मात्रा में शरीर के अन्दर प्रविष्ट होकर अपना प्रभाव छोड़ती हैं, जिससे जातक उससे सम्बंधित गतिविधियाँ करने लगता है। प्रत्येक ग्रह का अपना विशेष रंग होता है। सूर्य की किरणे सम्बंधित ग्रह से टकराकर उसी रंग में परिवर्तित होकर अनवरत रूप से पृथ्वी पर आती रहती हैं। आपने जल चिकित्सा का नाम अवश्य सुना होगा। एक ही प्रकार के जल को विभिन्न रंगों की बोतलों में भर कर सूर्य की रोशनी में रखा जाता है। सूर्य की किरणे विभिन्न रंगों में से आर-पार जाकर बोतलों में रखे एक ही प्रकार के जल पर भिन्न-भिन्न प्रभाव डालती हैं। जल चिकित्सा विशेषज्ञ भिन्न-भिन्न रोगों की चिकित्सा उस जल से करतें हैं। यह प्रभाव ठीक उसी प्रकार जल पर पड़ता है जैसे हम जिस भी रंग का चश्मा आंखों पर पहनेगें उसी रंग का हमें दिखाई देता है।

कंप्यूटर के इस युग में फ्लोपी से अभी वाकिफ हैं। जब उसे फोर्मेट किया जाता है तो वह अनेक सेक्टरों में विभाजित होती है, ठीक उसी प्रकार जब बच्चा माँ के संपर्क से हटकर प्रकृति के संपर्क में आता है तो ब्रह्माण्ड में व्याप्त अनेक महत्वपूर्ण ग्रह (जो स्वयं भिन्न-भिन्न रंगों के होते हैं तथा सूर्य की किरणों को उसी रंग में परावर्तित कर पृथ्वी पर अनवरत रूप से भेजते रहते हैं) बच्चे के शरीर को अपनी-अपनी शक्ति (दूरी, दिशा, कोण आदि के आधार पर) के अनुसार विभिन्न सेक्टरों में विभाजित कर उन पर अपना अधिकार कर लेते हैं। जब-जब भी सम्बंधित ग्रह की दशा-अन्तर्दशा आदि आती है अर्थात वह ग्रह प्रभावी होता है। तो अमुक ग्रह से सम्बंधित सेक्टर क्रियाशील हो उठता है तथा जातक अमुक ग्रह के कारकत्वों से सम्बंधित क्रियाएं करने लगता है।जातक के द्वारा की जानने वाली गतिविधियों को हम निम्न तीन प्रकार से जान सकते हैं।

1. जन्म-कुंडली में ग्रह की स्थिति,
2. ग्रह की दशा-अन्तर्दशा आदि,
3. ग्रह की गोचरस्थ स्थिति।

यदि ग्रह की स्थिति किसी भी प्रकार से कमजोर है अर्थात ग्रह कम प्रभावी है जो उस ग्रह को बली करने के लिए उस ग्रह से सम्बंधित रत्न (नग) जातक को धारण कराया जाता है तथा उस ग्रह से सम्बंधित वस्तुओं का प्रयोग करने की सलाह दी जाती है। यदि कोई ग्रह बली है तो उस ग्रह के नकारात्मक/ कुप्रभाव को कम करने के लिए अमुक ग्रह से सम्बंधित नग (रत्न) को धारण करने की सलाह नहीं दी जाती है बल्कि उस ग्रह से सम्बंधित वस्तुओं का दान करने तथा उन वस्तुओं के प्रयोग न करने की सलाह दी जाती है, जिससे उस ग्रह सेसम्बंधित होने वाले कुप्रभाव को कम किया जा सके।सभी ने यह अनुभव किया होगा कि छोटे-छोटे बच्चे शीशे के टूटे हुए टुकड़ों को सूर्य की तरफ उसके नीचे कागज़ अथवा बीडी के टुकड़ों को जला लेते हैं, क्योंकि सूर्य की किरणे शीशे में से निकल कर और अधिक तीव्र हो जाती है। कमजोर नेत्रों वाले विशेष आकार तथा कोण पर बनाये गए शीशे के चश्मों से साधारण चश्मों की अपेक्षा अधिक अच्छा देख पाते हैं क्योंकि नैत्र-ज्योति विशेष आकृति युक्त शीशों से निकल कर और अधिक तीव्र हो जाती है। ठीक इसी प्रकार साधारण नगों की तुलना में विशेष आकृति-युक्त नगों में से उससे सम्बंधित ग्रह की किरणे और अधिक तीव्र होकर (शरीर से छुए होने के कारण) शरीर के अन्दर प्रविष्ट होकर उस ग्रह से सम्बंधित कमी को दूर कर देती हैं तथा जातक उसी प्रकार की गतिविधि करने लगता है। सलाहः विशेष ग्रह से सम्बंधित नग (रत्न) को धारण करना ही हितकर होता है। अनेक नगों को एक साथ धारण करना कोकटेल की तरह सदैव हानिकारक होता है। अतः किसी योग्य व्यक्ति से परामर्श करके ही किसी विशेष परिस्थिति में ग्रह विशेष से सम्बंधित उचित भार व परिमाण का रत्न (नग) धारण करना चाहिए।

पं.राजीव भारद्वाज

दूर बैठे फोन से असाध्य रोग एवं मोटापा कम किया जा सकता है। एच.यू.एच. हीलिंग से मिले। सम्पर्क करें अथवा हमारी बेवसाईड पर विजिट करें:

पं. सतेन्द्र भारद्वाज केशव

एच.यू.एच. हीलर

मो0- 9871544842, 9871050422

E-mail :-

www. jyotishdrpn@gmail.com

website:www.astrologyden.com

ब्रह्मा जी की आंख से निकले आँसू से उत्पन्न

सृष्टि का प्रथम वृक्ष आँवला

कार्तिक के शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी को आँवले का महान् वृक्ष सब पापों का नाश करनेवाला है। उक्त चतुर्दशी का नाम बैकुण्ठ चतुर्दशी है। उस दिन आँवले की छाया में जाकर मनुष्य राधा सहित देवेश्वर श्री हरिका पूजन करे। तदनन्तर आँवले की एक सौ आठ प्रदक्षिणा करे। फिर साष्टांग प्रणाम करके परमेश्वर श्यामसुन्दर श्री कृष्ण की प्रार्थना करे। आँवले की छाया में बैठकर इस कथा को सुने, फिर ब्राह्मणों को भोजन करावे और यशाशक्ति दक्षिणा दें ब्राह्मणों के सन्तुष्ट होने पर मोक्ष दायक श्री हरि भी प्रसन्न होते है।पूर्व काल में जब सारा जगत् एकार्णव के जल में निमग्न हो गया था, समस्त चराचर प्राणी नष्ट हो गये थे, उस समय देवाधिदेव सनातन परमात्मा ब्राह्माजी अविनाशी परब्रह्मका जप करने लगे थे। ब्रह्मका जप करते-करते उनके आगे श्वास निकला। साथ ही भगवद्दर्शन के अनुराग वश उनके नेत्रोंसे जल निकल आया। प्रेम के आँसुओं से परिपूर्ण वह जल की बूँद पृथ्वी पर गिर पड़ी। उसी से आँवले का महान् वृक्ष उत्पन्न हुआ, जिसमें बहुत-सी शाखाएँ और उपशाखाएँ निकली थीं। वह फलों के भार से लदा हुआ था। सब वृक्षों में सबसे पहले आँवला ही प्रकट हुआ, इसलिये उसे 'आदि रोह' कहा गया। ब्रह्मा ने पहले आँवले को उत्पन्न किया। उसके बाद समस्त प्रजाकी सृष्टि की। जब देवता आदि की भी सृष्टि हो गयी, तब वे उस स्थान पर आये जहाँ भगवान् विष्णु को प्रिय लगने वाला आँवले का वृक्ष था। उसी समय आकाश वाणी हुई-'यह आँवले का वृक्ष सब वृक्षों से श्रेष्ठ है; क्योंकि यह भगवान विष्णु को प्रिय है। इसके स्मरण मात्र से मनुष्य गोदान का फल प्राप्त करता है। इसके दर्शन से दुगुना और फल खाने से तिगुना पुण्य होता है। इसलिये सर्वथा प्रत्यत्न करके आँवले के वृक्ष का सेवन करना चाहिये। क्योंकि वह भगवान् विष्णु को परम प्रिय एवं सब पापों का नाश करने वाला है, अतः समस्त कामनाओं की सिद्धि के लिये आँवले के वृक्ष का पूजन करना उचित है।'

जो मनुष्य कार्तिक में आँवले के वनमें भगवान् श्री हरि की पूजा तथा आँवले की छाया में भोजन करता है, उसका पाप नष्ट हो जाता है। आँवले की छायामें वह जो भी पुण्य करता है, वह कोटिगुना जाता है। प्राचीन काल की बात है, कावेरी के उत्तर तटपर देवशर्मा नाम से विख्यात एक श्रेष्ठ ब्राह्मण थे, जो वेद-वेदांगोकें पारंगत विद्वान् थे। उनके एक पुत्र हुआ जो बड़ा दुराचारी निकला। पिता ने उसे हित की बात बताते हुए कहा- 'बेटा! इस समय कार्तिक का महीना है जो भगवान् विष्णु को बहुत ही प्रिय हैं तुम इसमें स्नान, दान, व्रत और नियमों का पालन करो। भगवान् के लिये फूल सहित भगवान् विष्णु की पूजा करो। भगवान् के लिये दीप-दान, नमस्कार तथा प्रदक्षिण करो।' पिता की यह बात सुनकर वह दुष्टात्मा पुत्र क्रोध से जल उठा, उसके ओष्ठ फड़कने लगे और उसने पिता की निन्दा करते हुए कहा- 'तात! मैं कार्तिक में पुण्य-संग्रह नहीं करूँगा।' पुत्रका यह उद्दण्डता पूर्ण वचन सुनकर देवशर्मा ने क्रोध पूर्वक कहा-' ओ दुर्बुद्धि! तू वृक्ष के खोखले में चूहा हो जा।' इस शाप के भय से डरे हुए पुत्र ने पिता को नमस्कार करके पूछा- 'पूज्यवर! उस घृणित योनि से मेरी मुक्ति कैसे होगी, यह बताइये।' इस प्रकार पुत्र के द्वारा प्रसन्न किये जाने पर ब्राह्मण ने शाप निवृत्ति का कारण बताया-'जब तुम भगवान् को प्रिय लगने वाले कार्तिक व्रत का पवित्र माहात्म्य सुनोगे, उस समय उस कथाके श्रवण मात्र से तुम्हारी मुक्ति हो जायगी।' पिता के ऐसा कहने पर वह उसी क्षण चूहा हो गया और कई वर्षोंतक सघन वन में निवास करता रहा। एक दिन कार्तिक मास में विश्वामित्र जी अपने शिष्यों के साथ उधर आ निकले तथा नदी में स्नान करके भगवान् की पूजा करने के पश्चात् आँवले के छाया में बैठे। वहाँ बैठकर वे अपने शिष्यों से कार्तिक मास का माहात्म्य सुनाने लगे। उसी समय कोई दुराचारी व्याध शिकार खेलता हुआ वहाँ आया। वह प्राणियों की हत्या करनेवाला तो था ही, ऋषियों को देखकर उन्हें भी मार डालने की इच्छा करने लगा। परंतु उन महात्माओं के दर्शन से उसके भीतर सुबुद्धि जाग उठी। उसने ब्राह्मणों को नमस्कार करके कहा-'आप लोग यहाँ क्या करते हैं?' उसके ऐसा पूछने पर विश्वामित्र बोले-'कार्तिकमास सब महीनों में श्रेष्ठ बताया जाता है। उसमें जो कर्म किया जाता है, वह बरगदके बीज की भाँति बढ़ता है। जो कार्तिक मास में स्नान, दान और पूजन करके ब्राह्मण-भोजन करता है, उसका वह पुण्य अक्षय फल देने वाला होता है।' व्याध की प्रेरणा से विश्वामित्र जी के कहे हुए इस धर्म को सुनकर वह शाप भ्रष्ट ब्राह्मणकुमार चूहे का शरीर छोड़कर तत्काल दिव्य देह से युक्त हो गया और विश्वामित्र को प्रणाम करके अपना वृत्तान्त निवेदन कर ऋषिकी आज्ञा ले विमान पर बैठकर स्वर्गको चला गया। इससे विश्वामित्र और व्याध दोनों को बड़ा विस्मय हुआ। व्याध भी कार्तिक-व्रतका पालन करके भगवान् विष्णु के धाम में गया। इसलिये कार्तिक में सब प्रकार के प्रत्यत्न करके आँवले की छाया में बैठकर भगवान् श्री कृष्ण के सम्मुख कथा-श्रवण करे। जो ब्राह्मण कार्तिकमास में आँवले और तुलसी

की माला धारण करता है, उसे अनन्त पुण्य की प्राप्ति होती है। जो मनुष्य आँवले की छाया में बैठकर दीपमाला समर्पित करता है, उसको अनन्त पुण्य प्राप्त होता है। विशेषत: तुलसी-वृक्षके नीचे श्री राधा और श्यामसुन्दर भगवान् श्रीकृष्ण की पूजा आँवले के नीचे करनी चाहिये। तुलसी के अभाव में यह शुभ पूजा आँवले के नीचे करनी चाहिये। जो आँवले की छाया के नीचे कार्तिक में ब्राह्मण-दम्पतिको एक बार भी भोजन देकर स्वयं भी भोजन करता है, वह अन्न-दोष से मुक्त हो जाता है। लक्ष्मी-प्राप्ति की इच्छा रखनेवाला मनुष्य सदा आँवले से स्नान करे। विशेषत: एकादशी तिथिको आँवले से स्नान करने पर भगवान् विष्णु सन्तुष्ट होते है। नवमी, अमावस्या, सप्तमी, संक्रान्ति-दिन, रविवार, चन्द्रग्रहण तथा सूर्यग्रहण के दिन आँवले से स्नान नहीं करना चाहिये। जो मनुष्य आँवले की छाया में बैठकर प्रसाद ग्रहण करने से मोक्ष को प्राप्त होता है। तीर्थ या घर में जहाँ-जहाँ मनुष्य आँवले से स्नान करता है, वहाँ- वहाँ भगवान् विष्णु स्थित होते हैं। जिसके शरीर की हड्डियाँ आँवले के स्नाने से धोयी जाती हैं, वह फिर गर्भ में वास नहीं करता। जिनके सिरके बार आँवला मिश्रित जल से रंगे जाते हैं, वे मनुष्य कलियुग के दोषों के नाश करके भगवान् विष्णु को प्राप्त होते हैं। जिस घर में सदा आँवला रखा रहता है, वहाँ भूत, प्रेत, कूष्माण्ड और राक्षस नहीं जाते। जो कार्तिक में आँवले की छाया में बैठकर भोजन करता है, उसके घर एक वर्ष तक अन्न-संसर्ग से उत्पन्न हुए पाप का नाश हो जाता है।

अपना राशिफल कौन सी राशि से देखें

ज्योतिष के जिज्ञासुयों द्वारा ज्योतिषियों से अक्सर यह पूछा जाता है कि हम राशि फल के लिए कौन सी राशि देंखें क्यों कि अधिकतर लोगों कि जन्म की राशि कुछ ओर होती है। उच्चारित किये जाने वाले नाम से राशि कुछ ओर बनती है। तीसरी राशि पाश्चात्य ज्योतिष में एक ओर दिखाई जाती है वह माह के अनुरूप होती है उन्होंने एक एक माह चन्द्र को एक राशि में मान लिया तो प्रथमत: भारतीय वैदिक ज्योतिष में पाश्चात्य ज्योतिष का तो कहीं जिकर ही नहीं है। दूसरा चन्द्र प्रत्येक राशि में लगभग सवा दो दिन रहता है सो जिस समय जातक का जन्म होता है। उस समय चन्द्र जिस राशि में संचार कर रहा हो वही राशि जन्म की राशि कहलाती है तथा अगर उस राशि से सम्बन्धित वर्णमाला में से किसी शब्द द्वारा यानि दुसरे उच्चारित नाम से बनने वाली राशि मानी जाती है। हमारे जीवन पर इन्ही दो राशियों का प्रभाव पड़ता है। अब सवाल यह है कि किस राशि का कितना प्रभाव है। किस-किस काम को किस राशि से देखे। इस के लिए हम पाठकों की सुविधा हेतु शास्त्र का मत लिख रहे हैं।

विवाहे सर्वमांग्लये यात्रायां ग्रह गोचरे।
जन्म राशि प्रधानत्वं नाम राशि न चिन्तयेत्॥

अर्थात् विवाह हेतु, शुभ कार्य में, यात्रा में, घर बनवाने में गोचर गत ग्रहों का फल देखने में और जितने भी शुभ कार्य हैं। सब में जन्म राशि ही प्रधान है। स्पष्ट है कि जो कार्य हमें जीवन भर प्रभावित करता है वह कार्य हमें जन्म राशि से ही देख कर करना चाहिये तथा

देशे ग्रामे ग्रहे युद्धे सेवायां व्यवहार के।
नाम राशि प्रधानत्वं जन्म राशिं न चिंतयेत्॥

अर्थात् देश गाँव घर के विषय में, युद्ध अथवा नौकरी तथा व्यापार के विषय में बोलते नाम की राशि से ही विचार करना चाहिये जन्म की राशि से नहीं। **गौरव भारद्वाज**

धर्म के नाम पर लूट

कुछ बाहरी पंडित आकर गाजियाबाद से लाखों रूपये की लूट प्रतिवर्ष करते हैं। कहीं कालसर्प दोष का भय दिखाकर तो कहीं शनि राहु व केतु का भय दिखाकर कुछ दिनों से प्रतिवर्ष यहाँ कालसर्प दोष की शान्त नाम से यज्ञ व पूजन सैकड़ों लोगों से एक साथ कराया जा रहा है पाँच से ग्यारह हजार रूपये लगभग हर व्यक्ति से वसूले गये, करीब एक हफ्ते तक यज्ञ चला कई लाख का फायदा आचार्य जी को तो हो ही गया अब कालसर्प दोष किसी का शान्त हो या न हो उज्जैन कौन जा रहा है शिकायत करने।

आपको एक बात याद दिला दें प्राचीन ग्रंथो में कालसर्प नाम का कोई योग नहीं है। राहु के देवता काल और केतु के देवता सर्प दोनों का कुछ धन लोलुप ज्योतिषियों काल. सर्प कालसर्प योग बना दिया। वास्तव में कालसर्प कोई शब्द ही नहीं है ज्योतिष ग्रथों के शब्दकोष में उदाहरण के तौर पर राहु केतु कोई शरीर धारी देवता नहीं है। वह तो मात्र नार्थ पोल व साउथ पोल पर चन्द्रमा के कटान बिन्दु मात्र है। इसलिय फलित ज्योतिष में राहु का फल शनि के अनुसार व केतु का फल मंगल के अनुसार बताकर इति श्री की है। इसके अलावा ज्योतिष में अरिष्ट देखने के लिए त्रिशांश कुंडली सबसे महत्वपूर्ण कुंडली मानी जाती है। उसमें एक ही भाव में हमेशा राहु केतु बिराजमान रहते है कोई भी त्रिशंांश कुंडली किसी व्यक्ति की उठाकर देख सकता है तो जब एक ही भाव में राहु और केतु हैं तो अन्य सात ग्रह राहु केतु से ग्रसित कैसे हो सकते है। इसके अलावा यह भी लिखा है कि राहु केतु जिस ग्रह के साथ रहते हैं उस ग्रह के अनुसार ही फल देते हैं तो बहुत सारी कुंडलियों में जिन्हें कालसर्प दोषयुक्त बताया गया है उसमें राहु और केतु के साथ अन्य ग्रह भी बैठे है तो कालसर्प दोष कैसे बना क्योंकि राहु केतु तो जिस ग्रह को साथ हैं उसी की मदद करेंगे।

होरा लग्न में भी राहु और केतु एक ही भाव में रहते हैं और किसी न किसी ग्रह के साथ आप होरा लग्न की हजारों कुंडली देख समझ सकते हैं। होरा कुंडली को धन संपत्ति देखने के लिए प्रयोग किया जाता है तो राहु और केतु किसी न किसी ग्रह के साथ मौजूद है और उस ग्रह के प्रतिनिधि का कार्य कर रहे हैं तो वे धन नाशक कैसे बन सकते हैं।

सतेन्द्र भारद्वाज

Final Sept.qxd 8/29/2011 12:31 PM Page 29

वातरोगनाशक सुरंजान

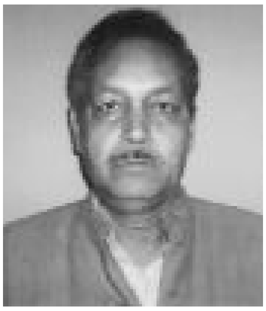

यूनानी चिकित्सा में सुरंजान का अपना विशिष्ठ स्थान है। इस की पैदावार बड़ी तादाद में (इरान) के पहाड़ी इलाकों के नमी वाली जगहों पर होती है। इसका पौधा लगभग नौ इंच के बराबर का होता है। अर्थात यह एक छोटी जाति का क्षुप होता है। यह एक प्रकार का कान्द है। इसका फूल नली की भीतर कन्द सख्त देखने में सूखे हुए सिंघाडा से मिलता जुलता एक पोथिया लहसुन की तरह का सफेद होता हैं सुरंजान के कन्द ईरान से भारत ही नहीं पुरी दुनिया में सप्लाई की जाती है। यह दो प्रकार का होता है (1) सुरंजान शीरी मधुर एवं (2) सुरंजान तल्ख (कडुआ)। इन दोनों में से मीठा खाने के काम में लिया जाता है। और कडुवे को बाहरी लेप तेल इत्यादि में प्रयोग किया जाता है। कडुवे सुरंजान की पहचान इसके पीले फूलों से हो जाती है। गुण धर्म के हिसाब से कडुवे सुरंजान की ताशिर खुश्क, उष्णवीर्य, प्रभाव शरीर की खुबसूरती को बढ़ाने वाला, वायु एवं कफ के रोगों को खत्म करता है। इसके लेप से शरीर के किसी भी हिस्से में दर्द हो या हड्डी में वाय के वजह से तकलीफ हो उसे ठीक करके सूजन को बिखेर देने में कारगर है। सुरंजान के कल्क से तैयार किये गये तेल का इस्तेमाल वायवादि के दर्द को ठीक करने में किया जाता है। पुराना बावसीर के दुख दाई मस्सों पर बकरी के दूध का घी या दूध में पिस कर लेप लगाने से तकलीफ दूर हो जाती है। सुरंजान शीरी के चूर्ण का बराबर की मात्रा में सोंठ का चूर्ण मिलाकर सुबह शाम 2-2 ग्राम की मात्रा में दूध से लेने पर कामोद्दीपक है। इस से नामर्दी की शिकायत दूर होती है। शरीर के किसी भी हिस्से में सूजन आ गई होतो उसे दूर करती है। दिमाग की गर्मी को दूर करने वाली है। मस्तकशूल, गाठियावाय, जोडोकेवातरोग, तिल्ली और जिगर के रोगों में यह बहुत ही मुफीद है। यह पाचन क्रिया को ठीक करने में लाजवाब है कुछ अधिक मात्रा में देने से पाचननालिका को उत्तेजित कर देता हे। परिणाम स्वरूप उल्टी और दस्त होकर पूरी मशीनरी की साफ सफाई कर देता है। जिगर की क्रिया को उत्तेजित करके पित्त संचालन की क्रिया को दुरूस्त करता है। किडनी को भी उत्तेजित करने का मादा इस में है। अत: यह किडनी की क्रिया को उत्तेजित कर के पेशाब की मात्रा को बढ़ा देता है। अधिक मात्रा में इसे नहीं लेना चाहिए वरना यह अपना नशीला असर दिखाता है। और सारे शरीर में जलन पैदा होती है। अगर ऐसा उपद्रव सुरंजान के प्रयोग काल में पैदा हो जाये तो इसका प्रयोग तत्काल बन्द कर देना चाहिए। एक से दो ग्राम की मात्रा में करते रहने से किसी भी प्रकार का उपद्रव नहीं होता है। और यह मेटावोलिजम पचअपच की क्रिया का अर्थात शरीर की जीवन विनियम क्रिया को सुधार कर शरीर को स्वस्थ एवं सुदृढ़ बनाता है। नाम ग्रंथ के अनुसार सुरंजान बाय की पीड़ा में के सब प्रकारों के लाभदायक हैं खाने में भी और लगाने में भी परन्तु कफ मवाद में अतिलाभदायक है इसमें जीरा और सोंठ मिला लेना चाहिए फिर मेदे की हानि नहीं करेगी और जब इसे खावें जोड़ों पर रोगन गुल मलते रहे तो इसकी खुश्की से फिर हानि नही होगी यह औषधि इस रोग में लाभ कारक है। सुरंजन और मिश्री मिलाकर कूटछान कर साढ़ेदश मासे ठंढ़े पानी के साथ पकावें। माजून सुरंजान- आसयन (तगर), सोंठ, जीराकाला, फिलफिल दराज, (पिपल) प्रत्येक 70-70 ग्राम सनाय 15 ग्राम सुरंजान मीठी 360 ग्राम सब को कूट कपड़छान कर शहद 2.500 में मिलाकर माजून बना लें। इसके उपयोग गठिया, वातरक्त तथा लंगडी के दर्द में लाभप्रद हैं। 10 ग्ररम माजून रात को सोते समय पानी या अर्क सौंफ के साथ लेने से थोड़ें दिनों में रोगी को आराम आने लगता है। माजून सुरंजान सभी प्रकार के वातरोगों की श्रेष्ठ औषध योग है। इसका प्रयोग बिना किसी भय के किया जा सकता है। सुरंजान शीरी, अश्वगन्धा, इस्पन्द (हरमल) और कुलंजन सम मात्रा के सूक्षम चूर्ण को शहद में मिलाकर रख लें और 3-4 ग्राम की मात्रा में सुबह दोपहर और रात में दूध से लेना फायदेमंद रहता है। मौजूद सुरंजान के नुस्खे के मामले में मतभिन्नता है। कबीर स्व0 हकीम कविरूद्दीन साहब तिथि कालेज दिल्ली और कराबादीन मजिदी हमदर्द वालों के नुस्खे में अन्तर है। लेकिन सब फायदेमंद है।

वैद्य शान्ति कुमार मिश्र, आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान

भारतीय संस्कृति की स्वर्णिम धरोहर ज्योतिष, योग विज्ञान, मंत्र तंत्र यंत्र तथा ज्योतिषीय चिकित्सा पद्धति एवं सम्पूर्ण आयुर्वेद पद्धति को आज के परिप्रेक्ष्य में जन-जन के बीच लाने वाली मासिक पत्रिका

सर्वज्ञ मुनि

ज्योतिष दर्पण

में वर्णित भारतीय संस्कृति के उपमानों, प्रतिविम्बों तथा ज्योतिष विज्ञान की समस्त विद्याओं से अवगत होने के लिए अपनी प्रति आज ही बुक कराएं और अपनी संस्कृति, सभ्यता का लाभ उठाएं।

प्रसार प्रबन्धक

सर्वज्ञमुनि ज्योतिष दर्पण

सी-8 मेरठ रोड, गाजियाबाद, (उत्तर प्रदेश)

योग एवं तंत्र विज्ञान

योग एवं तंत्र विज्ञान में सुषुम्ना नाड़ी का बड़ा महत्व है। यह नाड़ी हमेशा तटस्थ रहती है। यदि इसे सक्रिय कर दिया जाए, तो शरीर एवं मस्तिष्क में असीमित ऊर्जा का संचरण होने लगता है। कुंडलिनी-साधना में इसी नाड़ी को गतिशील करने का प्रयत्न किया जाता है, (इस नाड़ी के चमत्कारिक प्रभाव का वर्णन 'कुंडलिनी' अध्याय में देखें।

नासिका बन्ध

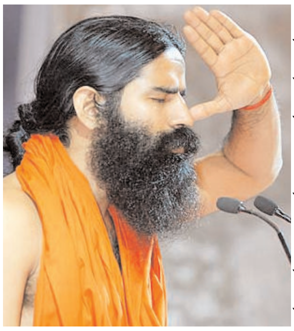

प्राणायाम के अभ्यास में अक्सर नासिका के किसी एक छिद्र को, जो कभी बायाँ होता है, तो कभी दायाँ, बन्द करना होता है। इसका अभ्यास पूर्व में ही कर लेना चाहिए।

दायाँ नासिका-छिद्र बन्द करने की विधि- दाएँ हाथ के अंगूठे से नासिका छिद्र के बाहरी भाग को दबाएँ और बाएँ नासिका-छिद्र से साँस खींचे।

बायाँ नासिका छिद्र बन्द करने की विधि- दाएँ हाथ की अनामिका उंगली से बाएँ नासिका-छिद्र की बाहरी दीवार को दबाएँ। दाएँ छिद्र से साँस खींचे। नाक के एक छिन्द्र को बन्द करके दूसरे से साँस लेना, फिर दूसरे को बन्द करके पहले से साँस छोड़ना। उसे दबाना, फिर दूसरे से साँस छोड़ना। इस क्रम में लगातार अभ्यास करते रहें। कुछ दिनों के अभ्यास से नाक को उंगली से बन्द करने की आवश्यकता नहीं होती।

प्राणायाम के प्रकार

प्राणायाम के अनेक प्रकार हैं। यहाँ कुछ मुख्य प्राणायामों के बारे में बताया जा रहा है।

१. कपालभाति प्राणायाम

कपालभाति क्रिया का आपने षट्कर्म में अभ्यास किया है। प्राणायाम के रूप में इसी कपालभाति का कुछ विस्तृत स्वरूप अभ्यास में लाया जाता है।

प्रायोगिक विधि- भूमि पर आसन बिछाकर पूर्व दिशा की ओर मुँह करके पद्मासन, सिद्धासन या सुखासन में बैठ जाएँ। पहले साँस को धीरे खींचे फिर झटके से उसे बाहर निकालें। धीरे-धीरे यह क्रिया तेज करते जाएँ।

इसमें आप झटके के साथ रेचक क्रिया करते रहने पर ही ध्यान दें। पूरक अपने आप हो जाएगा। गर्दन को दाएँ-बाएँ करते जाएँ। अब दाई नासिका को बन्द करके बाई नासिका से रेचक करें। यह रेचक झटके से होना चाहिए। अब तर्जनी से बायीं नासिका को बन्द करके दाई नासिका से रेचक करें। यह प्राणायाम जल नेति, सूत्र नेति या तैल नेति करने के बाद निश्चित रूपेण करना चाहिए।

लाभ-यह नाक और फेफड़े के साथ-साथ गले की गन्दगी को बाहर निकाल देता है। इससे चेहरे की झाई, फुन्सी, बर्रे आदि दूर होते हैं। चेहरे, ललाट, आँखों आदि में चमक बढ़ती है।

सावधानियाँ

1. रेचक करते समय रुकें नहीं।

2. गर्दन लगातार संचालित रहनी चाहिए लेकिन उसमें जोर से झटका न दें।

२. नाड़ी-शोधन प्राणायाम

नाड़ी शोधन प्राणायाम से नाड़ियों के विकारों का शोधन हो जाता है।

प्रायोगिक विधि- कपाल भाति प्राणायाम की भाँति आसन लगाकर बैठ जाइए। मस्तिक को शान्त करके बैठ जाइए। आँखें बन्द कीजिए। दाएँ हाथ के अंगूठे से दाएँ नथुने को दबाकर बन्द कर लीजिए। बाएँ नथुने से धीरे-धीरे पूरक कीजिए। जब पूरक क्रिया पूर्ण हो जाए, तो दाएँ हाथ की अनामिका से बाएँ नथुने को बन्द करके दाएँ नथुने से रेचक कीजिए।

बाएँ नथुने से पूरक कीजिए और फिर इसे बन्द करके दाएँ से रेचक कीजिए। यह एक चक्र है। इस प्रकार के तीन चक्र से प्रारम्भ करके तीस चक्र तक अभ्यास करें। रेचक और पूरक धीरे-धीरे करें। साँस की आवाज कानों को सुनाई नहीं देनी चाहिए।

लाभ- इस प्राणायाम के अभ्यास से शरीर की नसों एवं नाड़ियों की शुद्धि होती है। हृदय में रक्त संचार की गति स्वाभाविक होती है। इससे हृदय को बल मिलता है। सर्दी, जुकाम, कफ आदि विकार दूर होते हैं। दोनों नासिका छिद्र खुलते हैं।

सावधानियाँ

1. यह प्राणायाम सर्दी के दिनों में नहीं करना चाहिए।

2. इस प्राणायाम में जोर से साँस लेनी चाहिए। जोर से साँस निकालनी चाहिए।

3. कुम्भक करते समय प्राणवायु पर ध्यान लगाएँ।

सूर्यभेदी प्राणायाम

इस प्राणायाम से पिंगला अर्थात् सूर्य नाड़ी का शोघ होता है।

इसलिए इसे सूर्यभेदी प्राणायाम कहते हैं।

प्रायोगिक विधि- आसन पर पद्मासन की मुद्रा में बैठ जाएँ। आँखें बन्द कीजिए। बाएँ हाथ से बाएँ घुटने को पकड़िए। दाएँ हाथ की अनामिका से नासिका के दाएँ छिद्र से आवाज करते हुए जोर से पूरक करें। पूर्ण पूरक करके कुम्भक लगाएँ। जालंधर बन्ध लगाकर जितनी देर तक रह सकते हैं, रहिए। अब दाएँ नासिका-छिद्रा से रेचक कीजिए। इसके साथ ही जालन्धर बन्ध खोलिए।

प्रारम्भ में तीन चक्र का अभ्यास करें। बाद में इसे तीस चक्र कर सकते हैं।

ध्यान- कफ का नाश होता है। पित्त बढ़ता है। बादी का नाश होता है। शक्ति का संचार होता है। यह शरीर की गर्मी को बढ़ाता है। रक्त को शुद्ध करता है। पाचन-शक्ति बढ़ती है। यह यौवनवर्द्धक व शक्तिवर्द्धक व्यायाम है।

सावधानियाँ

1. पूरक एवं रेचक जोर से करें।

2. गर्मी के समय इस प्राणायाम का अभ्यास न करें।

५. उज्जाई प्राणायाम

उज्जाई प्राणायाम में गले से आवाज निकालते हुए की जाती है।

प्रोयोगिक विधि- भूमि पर आसन बिछाकर पद्मासन की मुद्रा में बैठ जाएँ। साँस की गति सामान्य रखते हुए मस्तिष्क के विचारों को शान्त करें, फिर आँखें बन्द कर लीजिए। रेचक करके साँस बाहर निकाल लीजिए। कंठ को संकोचित करके जीभ को उलट कर इसकी नोक को तालू से सटाइए। इसे 'खेचरी मुद्रा' कहते हैं। अब दोनों नासिका से धीरे-धीरे ऐसे पूरक कीजिए कि गले में घर्षण करते हुए वह अन्दर जाए। इससे आवाज भी होनी चाहिए। यह क्रिया बिना रुके तब तक होनी चाहिए, जब तक पूर्ण पूरक न हो जाए। छाती को फुलाइए। कुम्भक लगाइए।

दाहिने नासिका-छिद्र को दाएँ हाथ के अंगूठे से दबाइए। कंठ से संकोचन करते हुए खुर्राटे की ध्वनि करते हुए बाएँ नासिका-छिद्र से धीरे-धीरे रेचक कीजिए। साँस को पूरी तरह बाहर निकालकर प्रारम्भ में पाँच बार फिर तीस से पचास चक्र तक अभ्यास किया जा सकता है।

ध्यान-इस आसन में हृदय पर ध्यान लगाएँ। पीठ के मध्य रीढ़ की ही पर ध्यान लगाना भी लाभदायक होता है। कुछ साधक इसमें त्राटक का भी ध्यान लगाते हैं।

लाभ- कंठ, फेफड़े, हृदय, नाक, कान, गले आदि के रोगों के लिए यह प्राणायाम अत्यन्त लाभदायक है। सर्दी, जुकाम, खाँसी, बलगम, हृदय रोग, क्षय रोग, रक्तचाप, जलोदर, आमवात, कब्ज आदि में भी यह प्राणायाम रामबाण-सा असर करता हैं।

सावधानियाँ

1. कंठ को संकुचित करके ध्वनि निकालने का अभ्यास कीजिए।

यंत्र शास्त्रोक्त हों तो खुद दिखा देते हैं प्रभाव

भोज पत्र पर 24 " X 24" साईज का हस्त निर्मित

असली श्री यंत्र
प्राण प्रतिष्ठित एवं सिद्ध कर उपलब्ध करवाया जाता है।

ज्योतिषाचार्य, श्री विद्या साधक पं. सतेंद्र भारद्वाज केशव

एच.यू.एच. हीलर

अध्यक्ष सर्वज्ञमुनि ज्योतिष एवं मंत्र विज्ञान अनुसंधान गाजियाबाद मो0 9871050422, 9871544842

E-mail :- www. jyotishdrpn@gmail.com

website:www.astrologyden.com

सदस्यता फार्म

अगर आप भी इस पत्रिका के पाठक बनना चाहते है तो आज ही फोन करें और बुक करवाये अपनी हर माह की पत्रिका

शुल्क एक वर्ष 250 रुपये पांच वर्ष 1100 रुपये

दस वर्ष 2100 रुपये आजीवन 5100 रुपये

नाम...पिता/पति का नाम...

निवासी...

....

....सदस्यता.......................................के लिए ड्राफ्ट...........

............................भेज रहा हूं। कृपया मुझे अपनी पत्रिका **सर्वज्ञमुनि ज्योतिष दर्पण** का नियमित पाठक बनाये। धन्यवाद

पत्रिका के पृष्ठ संख्या 64 के प्रारूप को साफ शब्दों में भरकर तथा हमारे पते पर काटकर भेज दें। सदस्यता शुल्क का ड्राफ्ट बनवाकर पत्रिका के कार्यालय पर प्रेषित करें।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:

मो0 9871050422, 9971980265, 9871544842

हमारा पता है

सर्वज्ञमुनि ज्योतिष दर्पण

सी–8 लोहिया नगर मेरठ रोड, गाजियाबाद,

(उत्तर प्रदेश) मो0 9871050422

अगर आप सच्चे सरस्वती पुत्र है बनना चाहते हैं समस्त मानव जाति का कल्याण ज्योतिष यन्त्र मन्त्र वास्तु अध्यात्म तथा योग साधना से तो आज ही बनिये सदस्य अन्तर्राष्ट्रीय ज्योतिषिय धर्म के संघ हमारा लक्ष्य उपरोक्त विषयों को उन के सही प्रारूप में स्थापित कर समस्त संसार के मानव कल्याण हेतु सदैव तत्पर रहना।

इच्छुक सम्पर्क करे-

संस्थापक अध्यक्ष अन्तर्राष्ट्रीय ज्योतिषिय धर्म संघ

सर्वज्ञमुनि पं० सतेन्द्र भारद्वाज 'केशव' मो०- 9871050422

प्रधान कार्यालय:- सी-8, लोहिया नगर मेरठ रोड़, गाजियाबाद

E-mail :- www. jyotishdrpn@gmail.com

website:www.astrologyden.com

लेखकों से

अगर आप ज्योतिष विषय पर लिखे लेख सम्मानित पत्रिका में प्रकाशित करवाना चाहते है तो कृपया टाइर्प की हुई शास्त्रोक्त सामग्री निम्न पते पर भेज सकते हैं।

प्रेषित की गई सामग्री समाज कल्याण में सहायक होगी तो अवश्य

विवेक तथा ज्ञान से किया गया कर्म ही पूजा है

सवर्ज्ञमुनि

अन्तर्राष्ट्रीय पटल पर भारतीय संस्कृति का परचम लहराते हुए लाखों लोगों द्वारा पढ़े जाने वाला पाक्षिक समाचार पत्र एव मासिक पात्रिका

सर्वज्ञमुनि

ज्योतिष दर्पण

ज्योतिष अनुसंधान, प्रत्येक प्रकार की समस्या के समाधान तथा आपके जीवन को सुदृढ़ बनाने में सहायक समाचार पत्र में विज्ञापन के रूप में अपना सहयोग देकर हिन्दू संस्कृति तथा जीवन में ज्योतिष के महत्व का लाभ उठाएं।

विज्ञापन दर प्रति कालम से.मी. रू.100.00 (सौ रूपये मात्र)

सम्पादक : पं. सतेन्द्र भारद्वाज 'केशव'

सी-8 लोहिया नगर मेरठ रोड, गाजियाबाद, (उत्तर प्रदेश) मो0 9871050422